सुबह हो चुकी थी और

नये सूरज की सुनहरी झिलमिलाहट शान्त समुद्र की छोटी-छोटी लहरों पर यहाँ से वहाँ तक फैली हुई थी।

किनारे से एक मील की दूरी पर मछुआरों की एक नाव पानी में चारा डाल रही थी। इसके साथ ही नाश्ते के लिए एकत्रित होने का सन्देश तब तक हवा में फैलता रहा, जब तक कि हज़ारों समुद्री पंछियों (सीगल्स) का झुंड खाने के टुकड़ों को झपटने और लड़ने के लिए इकट्ठा नहीं हो गया। यह एक और हलचल भरे काम-काजी दिन की शुरुआत थी।

लेकिन दूर अकेले, नाव और समुद्र तट से परे, ख़ुद अपना साथी बना जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल अभ्यास में जुटा हुआ था। आकाश में सौ फ़ीट की ऊँचाई पर उसने अपने झिल्लीदार पंजे नीचे किये, चोंच उठायी और अपने पंखों के सहारे एक तकलीफ़देह तीव्र घुमावदार मोड़ लेने के लिए ज़ोर लगाया। घुमावदार मोड़ का मतलब ही था कि उसे धीमी रफ़्तार से उड़ना होगा। उसने अपनी रफ़्तार धीमी की और हवा उसके चेहरे पर फुसफुसाहट में बदल गयी, और उसके नीचे सागर बिलकुल स्थिर हो गया। उसने ज़बरदस्त एकाग्रता के साथ आँखें सिकोड़ीं, साँस रोकी, ज़ोर लगा कर घुमाव पर एक... महज़ एक इंच और बढ़ाया... फिर उसके पंख फड़फड़ाये, वह डोला और गिर गया।

जैसा कि आप जानते हैं, सीगल कभी डगमगाते नहीं, रुकते नहीं। बीच हवा में रुक जाना, डगमगाना, उनके लिए कलंक है, अपमान है।

लेकिन जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल कोई आम पक्षी नहीं था। बगैर शर्मिन्दा हुए, उसने एक बार फिर उस काँपत - थरथराते हुए तीव्र घुमावदार मोड़ में अपने पंख फैलाये - रफ़्तार धीमी, और भी धीमी की तथा एक बार फिर डगमगाया।

ज़्यादातर सीगल उड़ने की सबसे आसान तरकीबों - किनारे से खाने तक कैसे पहुँचें और फिर वापस आने से अधिक कुछ और सीखने की परवाह नहीं करते थे। अधिकतर सीगल्स के लिए असली बात उड़ान नहीं, भोजन था। मगर इस सीगल के लिए महत्त्व खाने का नहीं, उड़ने का था। जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल को किसी भी और चीज़ की बजाय उड़ना पसन्द था।

उसने पाया कि इस तरह की सोच रखना दूसरे पक्षियों के बीच लोकप्रिय होने का सही तरीक़ा नहीं है। यहाँ तक कि उसके माता-पिता भी जॉनाथन को पूरे-पूरे दिन, अकेले, कम ऊँचाई की सैकड़ों उड़ानें भरते, हवा में तैरते, प्रयोग करते देख हैरान रह जाते।

मिसाल के लिए, उसे मालूम नहीं था कि जब वह पानी के ऊपर अपने फैले हुए डैनों के फैलाव से आधी से कम ऊँचाई पर उड़ता तो वह हवा में क्यों ज़्यादा देर तक और कम ताक़त लगाकर उड़ लेता था। बिना डैने हिलाये, हवा में बहते चले जाने का अन्त आम पक्षियों की तरह पैर नीचे किये समुद्र में छपछपाते हुए उतरने में नहीं होता था, बल्कि पैरों को देह से कस कर सटाये एक लम्बी सपाट पट्टी पर सरकने के रूप में होता था। जब उसने पैर ऊपर कर सरकते हुए किनारे पर उतरना सीखा - और फिर सरकते हुए जितनी दूरी पार की, उतनी दूरी को रेत में दौड़ते हुए पार करना शुरू किया तो उसके माता-पिता को सचमुच बहुत हैरानी हुई थी।

"क्यों, जॉन, क्यों?" उसकी माँ पूछती। 'तुम्हारे लिए झुण्ड के बाक़ी पक्षियों जैसा होना इतना मुश्किल क्यों है, जॉन? तुम नीची उड़ानों को पेलिकन, ऐल्बैट्रॉस जैसे पक्षियों के लिए क्यों नहीं छोड़ देते? तुम *खाते* क्यों नहीं? जॉन तुम सिर्फ़ हड्डियों और पंखों का ढेर रह गए हो।'

"मुझे सिर्फ़ हड्डियों और पंखों के ढेर में बदल जाने पर बुरा नहीं लगता, माँ। मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि मैं हवा में क्या कर सकता हूँ और क्या नहीं। मैं केवल यही जानना चाहता हूँ।"

"इधर देखो जॉनाथन," उसके पिता ने कहा, मगर सख़्त लहज़े में नहीं। "सर्दियाँ अब बहुत दूर नहीं हैं। नावें कम होंगी और सतह वाली

मछलियाँ गहराई में चली जाएँगी। अगर तुम्हें जानना ही है तो खाने के बारे में जानो कि कैसे उसे हासिल किया जाये। यह उड़ने-उड़ाने वाला मामला तो ठीक है, मगर तुम उड़ान को खा तो नहीं सकते न? यह मत भूलो कि तुम इसलिए उड़ते हो ताकि खा सको।''

जॉनाथन ने बात मानते हुए सिर हिलाया। अगले कुछ दिनों तक उसने दूसरे सीगल्स जैसा व्यवहार करने की कोशिश की। उसने सचमुच कोशिश की घाटों पर और मछली पकड़ने वाली नावों के इर्द-गिर्द मछली और रोटी के टुकड़ों पर झपटते झुण्ड के साथ चीख़ने और झगड़ने की, लेकिन इससे उसका काम नहीं बना।

यह सब कितना बेकार है, बेमतलब है - उसने मुश्किल से हासिल की गयी एक छोटी-सी मछली को अपना पीछा करते भूखे बूढ़े सीगल के लिए जान-बूझ कर गिराते हुए सोचा। मैं यह सारा समय उड़ना सीखने में लगा सकता था। कितना कुछ है सीखने के लिए!

इसके बाद जॉनाथन सीगल जल्दी ही फिर एक बार अकेले निकल पड़ा, दूर समुद्र में, बिना खाये-पिये, ख़ुश, सीखने के उद्देश्य से।

सबक रफ़्तार का था और हफ़्ते भर के अभ्यास में उसने रफ़्तार के बारे में इतना सीख लिया था, जितना उस समय जीवित सबसे तेज़ सीगल को भी मालूम नहीं था।

एक हज़ार फ़ीट की ऊँचाई से, अपने पंखों को भरसक तीव्रता से फड़फड़ाते हुए उसने लहरों की तरफ़ बिजली की तेज़ी से सीधा ग़ोता लगाया। इसके बाद उसने जाना कि समुद्री पंछी क्यों बिजली की तेज़ी से सीधे और ताक़त से भरे ग़ोते नहीं लगाया करते। महज़ छह सेकेण्ड में वह सत्तर मील प्रति घण्टे की रफ़्तार तक पहुँच गया था, जिस रफ़्तार पर डैने ऊपर को उठते समय डगमगा जाते हैं।

बार-बार ऐसा ही हुआ। चाहे वह जितना भी ध्यान रखता, अपनी क्षमता के सबसे ऊँचे स्तर पर काम करते हुए, वह तेज़ रफ़्तार में नियन्त्रण खो बैठता।

पहले हज़ार फ़ीट की ऊँचाई तक पहुँचो। फिर पूरी रफ़्तार से सीधे उड़ो, फिर फड़फड़ाते हुए सीधे नीचे ग़ोता लगाओ। फिर हर बार जब उसका बायाँ डैना ऊपर आते समय रुक जाता, वह तेज़ी से बायीं ओर पलटी खाता, सँभल कर वापस आने के प्रयास में दायें डैने को रोकता। फिर एकाएक आग की लपट की तरह दायीं तरफ़ एक बेलगाम कलाबाज़ी के साथ चक्कर खाने लगता।

डैनों को ऊपर उठाते समय वह जितनी भी सावधानी बरतता, कम पड़ती। इस बार उसने कोशिश की और दस में से दस बार, सत्तर मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से गुजरते समय वह नियन्त्रण से बाहर हो रहे लहराते पंखों का ढेर बन जाता और पानी में जा गिरता।

पानी से पूरी तरह भीग कर आख़िरकार उसने सोचा, इस गुत्थी का हल यही होगा कि तेज़ रफ़्तार में डैनों को स्थिर रखा जाये - पंख फड़फड़ा कर पचास मील प्रति घण्टा की रफ़्तार हासिल कर ली जाये और उसके बाद पंखों को हिलाये-डुलाये बिना स्थिर रखा जाये।

दो हज़ार फ़ीट की ऊँचाई से उसने फिर कोशिश की, गोल-गोल घूमते हुए ग़ोता लगा कर चोंच सीधी नीचे की ओर, डैने पूरी तरह बाहर को फैले और पचास मील प्रति घण्टा की रफ़्तार को पार कर लिया। ज़बरदस्त ताक़त लगी, मगर तरकीब काम कर गयी। दस सेकेण्ड में वह नब्बे मील प्रति घण्टा की गति से फ़र्राटा भरते हुए निकल गया था। जॉनाथन ने सीगल्स के लिए रफ़्तार का एक विश्व रिकॉर्ड कायम कर दिया था।

लेकिन यह विजय बेहद क्षणिक साबित हुई। जिस क्षण उसने ग़ोते से बाहर आने की शुरुआत की, जिस क्षण उसने अपने डैनों का कोण बदला, वह फिर उसी भयानक अनियन्त्रित संकट में जा फँसा और नब्बे मील प्रति घण्टा की रफ़्तार पर मानो उसके आस-पास कोई धमाका हुआ। जॉनाथन सीगल बीच हवा में क़ाबू खो बैठा और पत्थर की तरह सख़्त समुद्र से जा टकराया।

जब उसे होश आया, अँधेरा हुए काफ़ी देर हो चुकी थी और वह चाँदनी में सागर की सतह पर तैर रहा था। उसके पंख सीसे की तरह खुरदरे हो गए थे, लेकिन उसकी पीठ पर असफलता का बोझ और भी भारी था। उस नाज़ुक पल में उसकी इच्छा हुई कि काश, यह बोझ बस इतना भर होता कि उसे धीरे-धीरे खींचता हुआ समुद्र के तल तक ले जाता और इस सबका अन्त कर देता।

पानी में नीचे डूबते हुए एक अजीब खोखली-सी आवाज़ उसे अपने अन्दर सुनायी दी। इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। मैं एक समुद्री पंछी हूँ, मेरी सीमा मेरी प्रकृति ने तय की है। अगर मेरे नसीब में उड़ान के बारे में इतना सब सीखना लिखा होता तो मेरे दिमाग़ की जगह नक़्शे होते। अगर मेरी प्रकृति में रफ़्तार से उड़ना लिखा होता तो मेरे पास बाज़ की तरह छोटे डैने होते। और मैं मछलियों की बजाय चूहे खा कर ज़िन्दा रहता। मेरे पिता सही थे। मुझे इस बेवकूफ़ी को भूल जाना चाहिए। मुझे उड़ कर वापस अपने झुण्ड के बीच चले जाना चाहिए और जिस हाल में हूँ, उस पर सन्तोष कर लेना चाहिए - एक बेचारे सीमित समुद्री पंछी के रूप में।

आवाज़ धीरे-धीरे मन्द होती चली गयी और जॉनाथन ने उसे मान लिया। रात के समय समुद्री पंछी की जगह किनारे पर है और उसने प्रतिज्ञा की कि अब से वह एक सामान्य समुद्री पंछी की तरह ही रहेगा। इससे सब ख़ुश रहेंगे।

उसने थके-हारे ढंग से ख़ुद को अँधेरे से ग्रस्त पानी से बाहर धकेला और ज़मीन की तरफ़ उड़ चला। मेहनत बचाने वाली कम ऊँचाई की उड़ान के बारे में उसने जो सीखा था, उसके लिए वह आभारी था।

लेकिन नहीं, उसने सोचा। जो मैं था, वह मैं छोड़ चुका हूँ, वह सब जो मैंने सीखा था वह मैंने ख़त्म कर दिया है। मैं दूसरे समुद्री पंछियों जैसा ही एक समुद्री पंछी हूँ और उन्हीं की तरह उड़ान भरूँगा। लिहाज़ा वह तकलीफ़ के साथ सौ फ़ीट की ऊँचाई तक पहुँचा और सागर तट की ओर बढ़ते हुए उसने और भी तेज़ी से अपने डैने हिलाये।

झुण्ड का महज़ एक और हिस्सा बने रहने के अपने फ़ैसले पर उसे पहले से बेहतर महसूस होने लगा। अब उस शक्ति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रह जायेगा जो उसे सीखने के लिए उकसाती रहती थी, अब और कोई चुनौती नहीं रह जायेगी, न कोई विफलता। यह सोचना बन्द करके समुद्र तट के ऊपर झिलमिलाती रोशनियों की तरफ़ अँधेरे को चीरते हुए उड़ते चले जाना कितना सुन्दर था।

अँधेरा। वह खोखली आवाज़ ख़तरे की आशंका से घबरा कर फट गयी। *सीगल्स कभी अँधेरे में नहीं उड़ते!*

जॉनाथन सतर्क नहीं था कि सुन पाता। यह सुन्दर है, उसने सोचा। चाँद और पानी पर झिलमिलाती रोशनियाँ, रात में किरणों की नन्हीं-नन्हीं पगडण्डियाँ बनाती हुईं, और सब कुछ इतना शान्त तथा स्थिर...

नीचे आओ। सीगल कभी रात में नहीं उड़ते। अगर तुम रात में उड़ने के लिए बने होते तो तुम्हारे पास उल्लू जैसी आँखें होतीं। दिमाग़ में नक़्शे होते। तुम्हारे पास बाज़ जैसे छोटे-छोटे पंख होते। रात में वहाँ, ज़मीन से सौ फ़ीट ऊपर जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल की आँखें झपकीं, उसका दर्द, उसके संकल्प ग़ायब हो गये।

छोटे-छोटे पंख! *बाज़ जैसे छोटे-छोटे पंख!*

यही तो हल है! मैं भी कैसा मूर्ख रहा हूँ! मुझे बस नन्हे पंख चाहिए। मुझे बस अपने ज़्यादातर पंखों को समेट कर सिर्फ़ उनके छोरों की मदद से उड़ते चले जाना है। छोटे पंख! वह सागर की कालिमा के ऊपर दो हज़ार फ़ीट की ऊँचाई तक चला गया और विफलता या मौत के किसी ख़याल के बिना उसने अपने आगे के डैने कस कर अपनी देह से सटाये। सिर्फ़ अपने डैनों की नन्हीं कटारों जैसी नोकें हवा में निकाले रखीं और फिर सीधे नीचे की ओर ग़ोता लगाया।

हवा उसके सिर पर ज़ोरदार गर्जना करती हुई आयी, सत्तर मील प्रति घण्टा, नब्बे, एक सौ बीस और उससे भी तेज़। डैनों पर दबाव अब एक सौ चालीस मील प्रति घण्टे पर इतना ज़्यादा नहीं था, जितना पहले

सत्तर पर महसूस हुआ था और अपने डैनों के छोर को हल्के से मरोड़ कर वह ग़ोते से बाहर निकल आया तथा लहरों के ऊपर से उड़ता चला गया, चाँदनी में तोप का एक गोला।

हवा के सामने उसने अपनी आँखें भींच कर दरारों जैसी कर लीं और ख़ुशी से भर उठा। एक सौ चालीस मील प्रति घण्टा! और पूरी तरह नियन्त्रण में! यही ख़याल आता है कि अगर मैं दो हज़ार फ़ीट की जगह पाँच हज़ार फ़ीट की ऊँचाई से ग़ोता लगाऊँ तो भला कितनी तेज़ी से मैं...

पल भर पहले के उसके सारे इरादे भुला दिये गये थे, वह शानदार तेज़ हवा उन्हें बुहार ले गयी थी। तो भी उस पर उन वादों को तोड़ने का कोई बोझ नहीं था जो उसने ख़ुद से किये थे। ऐसे वादे तो उन सीगल्स के लिए होते हैं, जो मामूली चीज़ों को स्वीकार कर लेते हैं। जिसने सीखने के दौरान शिखर को छू लिया हो उसके लिए उस तरह के वादे की कोई ज़रूरत नहीं है। सूरज के उगने तक जॉनाथन फिर अभ्यास में जुट गया था। पाँच हज़ार फ़ीट से मछुआरों की नावें सपाट नीले पानी में बेहद छोटी दिख रही थीं। सुबह के नाश्ते के समय चक्कर लगाता हुआ झुण्ड धूल के नन्हे-नन्हे कणों का गुबार-सा दिख रहा था।

वह जीवित था, ख़ुशी से बस हल्के-हल्के थरथराता हुआ, गर्व करता कि उसका डर क़ाबू में था। फिर बिना किसी विचार के, उसने अपने डैने अन्दर समेटे, अपने डैनों के छोटे तिरछे छोर बाहर निकाले और सीधे समुद्र की तरफ़ ग़ोता लगा दिया। चार हज़ार फ़ीट तक आते-आते वह रफ़्तार की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। हवा आवाज़ की एक ठोस धड़कती हुई दीवार जैसी थी, जिसके ख़िलाफ़ वह और तेज़ी से नहीं बढ़ सकता था।

वह अब दो सौ चौदह मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से सीधा नीचे की ओर उड़ रहा था। उसने थूक निगला, यह जानते हुए कि अगर इस रफ़्तार पर उसके डैने खुले तो वह लाखों नन्हे-नन्हे जर्रों में बिखर

जायेगा। लेकिन रफ़्तार ताक़त थी, और रफ़्तार आनन्द थी और रफ़्तार बेहद सुन्दर थी।

हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर उसने ग़ोते से बाहर आना शुरू किया, डैनों के छोर उस भीषण तेज़ हवा में फड़फड़ाते हुए और भी शिथिल होते गए। नाव और सीगल्स का झुंड एक ओर झुका हुआ और किसी उल्का जैसी तेज़ी से बड़ा होता हुआ, उसकी उड़ान के रास्ते में आ गया।

वह रुक नहीं सकता था; अभी तो उसे यह भी नहीं मालूम था कि इस रफ़्तार पर वह मुड़े कैसे।

टकराने का मतलब होगा तत्काल मर जाना।

और फिर उसने आँखें बन्द कर लीं।

और इस तरह उस सुबह सूरज के उगने के ठीक बाद हुआ यह कि जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल दो सौ बारह मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से, आँखें बन्द कर, हवा और पंखों की एक ज़बरदस्त आवाज़ के साथ नाश्ते के लिए एकत्रित झुण्ड को सीधा बीच से चीरता निकल गया। समुद्री पंछियों का देवता इस बार उस पर मेहरबान था, और कोई नहीं मारा गया था।

जब उसने अपनी चोंच सीधे आकाश की ओर ऊपर को उठायी थी, तब तक वह एक सौ साठ मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से उड़ान भर रहा था। जब वह धीमे हो कर बीस पर पहुँचा और आख़िरकार उसने फिर से अपने डैने फैलाये तो नाव समुद्र में किसी कण की तरह दिख रही थी – चार हज़ार फ़ीट नीचे।

उसके ख़यालों में विजय ही विजय थी! गति की चरम सीमा! दो *सौ चौदह मील प्रति घण्टे* की रफ़्तार से एक समुद्री पंछी! यह तो नायाब उपलब्धि थी, झुण्ड के इतिहास में सबसे बड़ा क्षण और उसी क्षण में जॉनाथन सीगल के लिए एक नये युग के द्वार खुल गये। उड़ते हुए अभ्यास के अपने एकाकी क्षेत्र तक पहुँच कर उसने आठ हज़ार फ़ीट की

ऊँचाई से ग़ोता लगाने के लिए डैनों को समेटा और फौरन यह जानने के लिए ख़ुद को तैयार किया कि मुड़ा कैसे जाये।

उसने पाया कि डैनों के छोर के एक अकेले पंख को अगर थोड़ा-सा हिलाया जाये तो वह बेहद तेज़ रफ़्तार पर एक बाधा-रहित समतल बड़े दायरे में फैला हुआ मोड़ काटने में मदद देता था। लेकिन इसे सीखने से पहले उसने पाया था कि उस रफ़्तार पर एक से अधिक पंखों को हिलाने से वह बन्दूक की गोली की तरह चक्कर खाने लगेगा... और जॉनाथन पृथ्वी पर हवाई करतब करने वाला पहला समुद्री पंछी बन गया था।

उस दिन उसने दूसरे समुद्री पंछियों के साथ बातचीत में जरा भी समय बर्बाद नहीं किया और सूर्यास्त के बाद तक उड़ता रहा। उसने खोज लिया कि हवा में छल्ले कैसे बनाते हैं, धीमी रफ़्तार से गोल-गोल कैसे घूमते हैं, एक ही बिन्दु पर कैसे घूमते हैं, उलटे होकर चक्कर कैसे खाते हैं, सीगल की तरह धकेलते कैसे हैं, फिरकी की तरह कैसे घूमते हैं।

• • •

जब जॉनाथन सीगल सागर तट पर झुण्ड में जा मिला तो रात पूरी तरह ढल चुकी थी। उसे चक्कर आ रहे थे और वह बेहद थका हुआ था। तो भी ख़ुशी में उसने उतरते वक़्त एक छल्ला बनाया और ज़मीन को छूने से पहले फुर्ती से कलाबाज़ी लगायी। उसने सोचा, जब उन्हें उसकी उपलब्धि का पता चलेगा तो वे ख़ुशी से पागल हो जायेंगे। अब जीवन जीने में कितना मजा है। बजाय मछली पकड़ने वाली नावों तक आने-जाने का नीरस काम करने के, ज़िन्दगी का एक मतलब है! हम ख़ुद को अज्ञान के दलदल से ऊपर उठा सकते हैं, स्वयं को विशेष गुणों वाले, बुद्धिमान और कुशल जीवों के रूप में पहचान सकते हैं। हम मुक्त हो सकते हैं! *हम उड़ना सीख सकते हैं!*

आगे आने वाले वर्ष सम्भावनाओं से गूँज रहे थे, दमक रहे थे।

जब वह ज़मीन पर उतरा तो सभी सीगल परिषद की बैठक में इकट्ठा थे और ज़ाहिर था कि वे कुछ समय से इसी तरह इकट्ठा थे। वास्तव में, वे इन्तज़ार कर रहे थे।

''जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल! बीचों-बीच खड़े हो जाओ!'' मुखिया के शब्द किसी बड़े समारोह के समय इस्तेमाल होने वाली आवाज़ में गूँजे। बीचों-बीच खड़े होने का मतलब था भारी शर्मिन्दगी या भारी सम्मान। सम्मान के लिए बीचों-बीच खड़े हो जाना वह तरीक़ा था, जिससे सीगल्स के सबसे बड़े नेता की निशानदेही होती थी। निश्चय ही, उसने सोचा, आज सुबह वह नाश्ते वाला झुण्ड... उन्होंने उसकी उपलब्धि देखी थी। लेकिन मुझे कोई सम्मान नहीं चाहिए। मेरी कोई इच्छा नहीं है कि नेता बनूँ। मैं तो सिर्फ़ वही बाँटना चाहता हूँ, जो मैंने पाया है, वह क्षितिज दिखाना चाहता हूँ, जो हम सबके आगे फैला हुआ है। वह आगे बढ़ा।

''जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल,'' मुखिया ने कहा, ''अपने साथी सीगल्स के सामने नज़रें झुकाकर बीचों-बीच खड़े हो जाओ।''

ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे कोई लकड़ी का पटिया दे मारा हो। उसके घुटनों की ताक़त जाती रही, पंख लटक गये, कानों में जैसे कोई गर्जना होने लगी। शर्मिन्दा होने के लिए बीचों-बीच खड़ा होना? असम्भव! वह उपलब्धि! वे समझ नहीं पा रहे हैं! वे ग़लत हैं, ग़लत हैं!

''...उसकी लापरवाही भरी ग़ैरज़िम्मेदारी के लिए,'' वह गम्भीर आवाज़ गूँज रही थी, ''सीगल्स बिरादरी की गरिमा और परम्परा को तोड़ने के लिए...''

शर्मिन्दगी में बीचों-बीच खड़े किये जाने का मतलब था कि उसे समुद्री पंछियों के समाज से बाहर निकाल दिया जायेगा, दूर स्थित खड़ी चट्टानों पर अकेली ज़िन्दगी बिताने के लिए छोड़ दिया जायेगा।

“...एक दिन, जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल, तुम्हें पता चलेगा कि गैरज़िम्मेदारी से कोई फ़ायदा नहीं होता। जीवन के बारे में हम इसके सिवा कुछ जानते नहीं, न जान सकते हैं, कि हमें इस दुनिया में खाने के लिए भेजा गया है, जितने समय तक हम जी सकें, जीने के लिए भेजा गया है।”

कोई सीगल परिषद के झुण्ड को पलट कर जवाब नहीं देता, लेकिन जॉनाथन की आवाज़ सुनाई दी। “ग़ैरज़िम्मेदारी? मेरे भाइयों!” वह चिल्लाया।

“उस सीगल से ज़्यादा ज़िम्मेदार कौन है, जो ज़िन्दगी का एक मतलब, एक और भी ऊँचा उद्देश्य खोज लेता है तथा उस पर चलता है? हज़ारों वर्षों से हम मछलियों के लिए छीना-झपटी करते रहे हैं, लेकिन अब हमारे पास जीने की - सीखने की, खोजने की, आज़ाद होने की एक वजह है! मुझे एक मौक़ा दीजिए, मैं आपको दिखाऊँगा मैंने क्या पाया है...”

झुण्ड जैसे पत्थर का बना था।

“हमारा भाईचारा टूट गया है,” सीगल्स ने एक स्वर से कहा और एक राय से उन्होंने अपने कान गम्भीरता से बन्द कर लिये तथा उसकी तरफ़ अपनी पीठ कर दी।

• • •

जॉनाथन सीगल ने अपने बाक़ी के दिन अकेले बिताये, लेकिन वह दूर स्थित चट्टानों से कहीं परे तक उड़ता चला गया। उसका एकमात्र दुख अकेलापन नहीं था, बल्कि यह था कि दूसरे सीगल्स ने उस शान में विश्वास करने से इनकार किया था, जो उड़ने में थी और जो उनका इन्तज़ार कर रही थी; उन्होंने अपनी आँखें खोल कर देखने से इनकार कर दिया था।

हर रोज़ वह और सीखता। उसने सीखा कि एक चुस्त तेज़ रफ़्तार वाला ग़ोता लगाने पर वह उन दुर्लभ और स्वादिष्ट मछलियों को खोज सकता था, जो समुद्र की सतह से दस फ़ीट नीचे झुण्ड बना कर चलती थीं; अब उसे ज़िन्दा रहने के लिए मछली पकड़ने वाली नावों और बासी रोटी की ज़रूरत नहीं रह गयी थी। उसने हवा में ही नींद लेना सीख लिया - रात को तट के बाहर की हवा के पार दिशा तय करके, सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच सौ मील का फ़ासला पार करते हुए। इसी भीतर के नियन्त्रण से वह भारी समुद्री कोहरे को चीर कर उसके ऊपर चमकते हुए साफ़ आकाश तक उड़ता चला जाता... जिस समय बाक़ी सभी सीगल्स धुन्ध और बारिश के अलावा और कुछ न जान पाते और ज़मीन पर खड़े रह जाते। उसने ऊँची हवाओं पर सवार हो कर किनारे से बहुत अन्दर तक पहुँचना और वहाँ मुलायम कीड़ों का भोजन करना सीख लिया।

जिसकी उम्मीद उसने कभी पूरे झुण्ड के लिए की थी, वह अब सिर्फ़ अपने लिए हासिल करता; उसने उड़ना सीखा था और जो क़ीमत इसके लिए चुकायी थी, उस पर वह दुखी नहीं था। जॉनाथन सीगल ने पाया कि ऊब और भय और गुस्सा वे कारण हैं, जिनसे एक समुद्री पंछी की ज़िन्दगी इतनी छोटी होती है, और अपने ख़यालों से इनके दूर होने पर उसने सचमुच एक लम्बा और बेहतर जीवन जिया था।

तभी वे शाम को आये और उन्होंने जॉनाथन को अपने अति प्रिय आसमान में अकेले और शान्ति से पंख हिलाये बिना उड़ते पाया। जो दो समुद्री पंछी उसके डैनों के बगल में प्रकट हुए, वे सितारों के प्रकाश की तरह निर्मल थे और उनसे आ रही आभा रात की उस ऊँची हवा में मुलायम और दोस्ताना थी। लेकिन सबसे प्यारा था वह कौशल जिससे वे उड़ रहे थे - उनके डैनों के छोर उसके अपने डैनों से ठीक एक-सी दूरी पर थे और लगातार हिल रहे थे।

बिना एक शब्द कहे, जॉनाथन ने उनकी परीक्षा ली, अपनी बनायी परीक्षा, जिस पर अभी तक कोई समुद्री पंछी खरा नहीं उतरा था। उसने अपने डैने मोड़े, रुकने की सीमा से एक मील प्रति घण्टे की रफ़्तार तक

धीमा हो गया। दोनों चमकदार पंछी उसके साथ-साथ धीमे हो गये, आराम से, ठीक उसी जगह स्थिर। उन्हें धीमी गति से उड़ने के बारे में मालूम था।

उसने डैने समेटे, गोल घूमा और ग़ोता मार कर एक सौ नब्बे मील प्रति घण्टा पर आ गया। उन्होंने भी उसके साथ ग़ोता लगाया, ख़ामी रहित व्यूह में नीचे की ओर फ़र्राटा भरते हुए।

आख़िरकार, उसने उस रफ़्तार को मोड़ कर सीधे ऊपर की तरफ़ एक धीमे-धीमे घूमने वाली उड़ान में बदल दिया। वे भी मुस्कराते हुए उसके साथ गोल-गोल घूमने लगे।

वह पलट कर सपाट उड़ान में चला आया और थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद उसने बात शुरू की। "ठीक है," वह बोला, "कौन हो तुम?"

"हम तुम्हारे झुण्ड से आये हैं, जॉनाथन। हम तुम्हारे भाई हैं।" उनके शब्द दृढ़ता और तसल्ली से भरे थे। "हम तुम्हें और ऊँचा ले जाने आये हैं, तुम्हें घर ले जाने आये हैं।"

"मेरा कोई घर नहीं है। मेरा कोई झुण्ड नहीं है। मैं बहिष्कृत हूँ और हम इस समय शानदार पहाड़ी हवा के शिखर पर उड़ रहे हैं। अब मैं इस बूढ़े शरीर को कुछ सौ फ़ीट के ऊपर नहीं ले जा सकता।"

"लेकिन तुम कर सकते हो, जॉनाथन। क्योंकि तुमने सीखा है। एक स्कूल ख़त्म हो गया है और अब समय आ गया है कि दूसरा स्कूल शुरू हो।"

इस तरह की समझदारी ने जॉनाथन सीगल के लिए उस क्षण को आलोकित कर दिया था मानो वह ताउम्र उसके ऊपर दमकते रहने वाली थी। वे सही थे। वह और भी ऊँचा उड़ सकता था और अब घर जाने का वक़्त आ गया था।

उसने आकाश के विस्तार पर, उस शानदार रुपहली ज़मीन पर एक आख़िरी लम्बी निगाह डाली, जहाँ उसने इतना कुछ सीखा था।

“मैं तैयार हूँ,” आख़िरकार उसने कहा।

और जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल उन दो नक्षत्र जैसे उज्ज्वल पंछियों के साथ एक बिलकुल काले आकाश में ग़ायब हो जाने के लिए ऊपर को उठता चला गया।

तो यह है स्वर्ग,

उसने सोचा और वह ख़ुद अपने ऊपर मुस्कराया। यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं थी कि कोई उड़ता हुआ स्वर्ग में दाख़िल होने के लिए ऊपर आये और उसकी छान-बीन और जाँच-परख शुरू कर दे।

धरती से अब बिलकुल क़तारबद्ध हो कर बादलों के ऊपर उन दो चमकदार समुद्री पंछियों के साथ आते समय उसने देखा कि उसका अपना शरीर उन दोनों की तरह उजला और चमकदार होता जा रहा है। यह सच था कि वहाँ वही युवा जॉनाथन सीगल था, जो अपनी सुनहरी आँखों के पीछे रहता था, लेकिन उसका बाहरी रूप बदल गया था।

लगता तो वह समुद्री पंछियों के शरीर जैसा ही था, लेकिन वह उसकी पुरानी काया से कहीं बेहतर उड़ता था। उसने सोचा कि अरे, सिर्फ़ आधी कोशिश करके मैं धरती पर अपने सबसे अच्छे दिनों के मुक़ाबले दोगुनी रफ़्तार से उड़ सकूँगा और दोगुना प्रदर्शन कर सकूँगा।

उसके सफ़ेद पंख अब दमकते थे और उसके डैने चाँदी के माँजे हुए पत्तों की तरह चिकने और निर्मल बन गये थे। उसने ख़ुशी के साथ उनके बारे में सीखना, और उन नये डैनों में ताक़त लानी शुरू की।

दो सौ पचास मील प्रति घण्टा की रफ़्तार पर उसे महसूस हुआ कि वह समान स्तर वाली उड़ान की अपनी अधिकतम गति तक पहुँच रहा है। दो सौ तिहत्तर की गति पर उसने सोचा कि वह उतनी तेज़ी से उड़ रहा है, जितना कि वह उड़ सकता था, और उसे हल्की-सी निराशा हुई। नया शरीर जितना कर सकता था, उसकी एक सीमा थी और हालाँकि यह उसकी समान स्तर वाली उड़ान के पुराने रिकॉर्ड से कहीं तेज़ थी, तो भी यह एक ऐसी सीमा थी, जिसे पीछे छोड़ने के लिए उसे बेहद कोशिश करनी पड़ेगी। उसने सोचा, स्वर्ग में कोई सीमा नहीं होनी चाहिए।

बादल छँट गये, उसके साथियों ने पुकार कर कहा, "तुम्हारा स्वागत है, जॉनाथन," और हवा में विलीन हो गये।

वह समुद्र के ऊपर उड़ रहा था, एक टूटे-फूटे किनारे की तरफ़। बहुत थोड़े-से सीगल्स पर हवा के बहाव में ऊपर की ओर उड़ानें भर रहे थे। दूर उत्तर की तरफ़, लगभग क्षितिज के पास, कुछ और सीगल्स उड़ रहे थे। नये दृश्य, नये ख़याल, नये सवाल। इतने कम सीगल्स क्यों? स्वर्ग में तो सीगल्स के झुण्ड-पर-झुण्ड होने चाहिए! और मैं इतना थक क्यों गया हूँ, वह भी अचानक ही? स्वर्ग में तो समुद्री पंछी कभी थकते नहीं, न सोते हैं, ऐसा माना जाता है।

यह उसने कहाँ सुना था? पृथ्वी पर उसके जीवन की स्मृति झरती जा रही थी। धरती ऐसी जगह थी जहाँ उसने यक़ीनन बहुत सीखा था, लेकिन यादें धुँधली पड़ गयी थीं - शायद खाने के लिए लड़ने-भिड़ने और बहिष्कृत होने का कोई मामला था।

तट के पास वे दर्जन भर समुद्री पंछी उससे मिलने आये, पर किसी ने एक शब्द भी नहीं बोला। उसने सिर्फ़ यही महसूस किया कि वहाँ उसका स्वागत था और यही उसका घर था। यह उसके लिए एक बड़ा दिन था, ऐसा दिन जिसका सूर्योदय अब उसे याद नहीं रह गया है।

वह सागर-तट पर उतरने के लिए मुड़ा, ज़मीन से एक इंच ऊपर रुकने के लिए उसने अपने डैने फड़फड़ाये, फिर हौले से रेत पर आ गया। दूसरे समुद्री पंछी भी उतर गये, लेकिन उनमें से किसी ने एक पंख तक नहीं फड़फड़ाया। वे अपने उजले डैने फैलाये हवा के साथ हो लिये थे, फिर जाने कैसे उन्होंने अपने परों का घुमाव बदला और वे ठीक उसी क्षण रुके जब उनके पैर धरती पर आ टिके। बेहतरीन नियन्त्रण था, लेकिन फिलहाल जॉनाथन इतना थक गया था कि उसे आजमा नहीं पा रहा था। वहीं तट पर खड़े-खड़े, अब भी बिना एक शब्द बोले, वह सो गया।

आने वाले दिनों में जॉनाथन ने देखा कि इस जगह भी उड़ान के बारे में उतना ही सीखने के लिए था, जितना कि उस ज़िन्दगी में जो उसके

पीछे रह गयी थी। लेकिन एक अन्तर के साथ। यहाँ जो समुद्री पंछी थे, वे उसी की तरह सोचते थे। उनमें से हरेक के लिए जीवन में सबसे बड़ी चीज़ थी उस काम को हाथ में लेना और उसमें महारत हासिल करना, जो वे करना चाहते थे और वह काम था उड़ना। वे शानदार पखेरू थे, सब-के-सब और वे हर रोज़ घण्टों उड़ने का अभ्यास करते, उड़ने से जुड़ी आगे की तकनीकों को आजमाते हुए उनकी परीक्षा करते।

एक लम्बे समय तक जॉनाथन उस दुनिया के बारे में भूला रहा जहाँ से वह आया था। वह जगह जहाँ झुण्ड अपने डैनों को सिर्फ़ खाना खोजने और उसके लिए लड़ने के उद्देश्य से इस्तेमाल करते हुए उड़ान के आनन्द की तरफ़ आँखें बन्द किए रहता था। मगर कभी-कभार, पल भर के लिए उसे याद आ ही जाती।

एक सुबह वह दुनिया उसे याद हो आयी जब वह अपने प्रशिक्षक के साथ बाहर निकला हुआ था और वे सिमटे डैनों के साथ गोल-गोल घूमने का एक दौर ख़त्म करने के बाद तट पर आराम कर रहे थे।

"सब कहाँ हैं, सलिवन?" उसने शोर किये बिना पूछा, शब्दों के बिना केवल अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के उस आसान माध्यम से जिसे यहाँ के पंछी, चीख़ों और काँव-काँव की जगह इस्तेमाल किया करते थे। "यहाँ हमारे जैसे और क्यों नहीं हैं? अरे, जहाँ से मैं आया, वहाँ तो..."

"...हज़ारों, हज़ारों, सीगल्स हैं। मैं जानता हूँ।" सलिवन ने अपना सिर हिलाया। "मुझे तो सिर्फ़ एक ही उत्तर दिखायी देता है जॉनाथन, और वह यह कि तुम लाखों में एक पखेरू हो। हममें से ज़्यादातर बहुत धीमे-धीमे आगे बढ़े हैं। हम एक दुनिया से लगभग हू-ब-हू उसी जैसी दूसरी दुनिया में जाते रहे, तत्काल यह भूलते हुए कि हम कहाँ से आये थे, बिना परवाह किये कि हम जा कहाँ रहे हैं, सिर्फ़ उसी क्षण में जीते हुए। क्या तुम्हें कुछ पता है कि हमने कितने जन्म ले लिए होंगे, जब पहली बार हमें यह विचार आया कि ज़िन्दगी में महज़ खाने या लड़ने

अथवा झुण्ड की ताक़त के सिवा कुछ और भी है? हज़ारों जन्म जॉन, दसियों हज़ार जन्म! फिर इसके बाद सौ जीवन और जब तक कि हमने यह नहीं सीखना शुरू किया कि पूर्णता जैसी भी कोई चीज़ होती है तथा फिर सौ जन्म और – इस विचार तक पहुँचने के लिए कि ज़िन्दगी का हमारा उद्‌देश्य है पूर्णता प्राप्त करना तथा उसे सामने ला कर दिखाना। यही नियम अब भी हम पर लागू होता है। यक़ीनन हम इस दुनिया में जो सीखते हैं उसी के माध्यम से अपने अगले संसार को चुनते हैं। कुछ भी मत सीखो और अगली दुनिया ठीक इसी के जैसी है, जीतने और पीछे छोड़ने के लिए वही सीमाएँ और भारी बोझ।''

उसने अपने डैनों को ताना और अपना रुख़ हवा की तरफ़ करने के लिए मुड़ा। ''लेकिन तुमने, जॉन,'' वह बोला, ''इतना कुछ एक ही समय में सीख लिया कि तुम्हें इस ज़िन्दगी तक पहुँचने के लिए हज़ार जन्मों से नहीं गुजरना पड़ा।''

क्षण भर में वे फिर हवा में उड़ते हुए अभ्यास कर रहे थे। उसी बिन्दु पर क़तारबद्ध होकर चक्कर काटना मुश्किल था, क्योंकि औंधी स्थिति में आधा चक्कर काटने के दौरान जॉनाथन को उलटे होकर सोचना पड़ता था, अपने डैने की गोलाई को पलटते हुए और इस तरह पलटते हुए कि वह प्रशिक्षक के साथ एकदम मेल खाये।

''आओ, फिर से करके देखें,'' सलिवन ने बार-बार कहा : ''फिर से करके देखें।'' फिर अन्त में कहा, ''उम्दा!'' और उन्होंने बाहरी घेरों का अभ्यास करना शुरू किया।

• • •

एक शाम जो समुद्री पंछी रात की उड़ान पर नहीं थे, रेत पर एक साथ खड़े होकर सोच रहे थे। जॉनाथन ने अपनी सारी हिम्मत बटोरी और मुखिया पंछी के पास गया, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे जल्द ही इस दुनिया से परे जाने वाले हैं।

''चियाँग,'' उसने थोड़ा घबराते हुए कहा।

बूढ़े पक्षी ने नरमी से उसकी तरफ़ देखा। ''कहो, मेरे बच्चे?'' उम्र बढ़ने पर कमजोर होने की बजाय, मुखिया ताक़तवर हो गये थे; वे झुण्ड में किसी भी पखेरू को पीछे छोड़ सकते थे और उन्होंने ऐसे कौशल सीख लिये थे, जिनके बारे में दूसरों को अभी धीरे-धीरे पता ही चल रहा था।

''चियाँग, यह स्वर्ग तो नहीं है, है न?''

चाँदनी में मुखिया मुस्कराये। ''तुम दोबारा सीख रहे हो, जॉनाथन सीगल,'' उन्होंने कहा।

''ख़ैर, इसके बाद फिर क्या होता है? हम कहाँ जा रहे हैं? क्या स्वर्ग जैसी कोई जगह नहीं है?''

''नहीं, जॉनाथन, ऐसी कोई जगह नहीं है। स्वर्ग कोई जगह नहीं है और वह कोई समय नहीं है। स्वर्ग है पूर्ण बनना।'' वे पल भर ख़ामोश रहे। ''तुम बहुत तेज़ उड़ते हो न?''

''मुझे... मुझे रफ़्तार में मजा आता है,'' जॉनाथन ने कहा। चकित हो कर, मगर गर्व के साथ क्योंकि मुखिया का ध्यान उस पर गया था।

''जिस क्षण तुम सर्वोत्तम गति को छू लोगे, जॉनाथन, तुम स्वर्ग को छूना शुरू कर दोगे। और यह हज़ार मील प्रति घण्टा या लाख मील प्रति घण्टा अथवा प्रकाश की गति से तेज़ उड़ने के बराबर नहीं है, क्योंकि कोई भी संख्या एक सीमा है और पूर्णता की सीमा नहीं होती। संपूर्ण गति, मेरे बच्चे, वहाँ पहुँचना है।''

बिना किसी चेतावनी के चियाँग ग़ायब हो गये और पचास फ़ीट दूर पानी के छोर पर नज़र आये, बस, पलक झपकते। फिर वे दोबारा ग़ायब हो गये और उसी पल के हज़ारवें हिस्से में जॉनाथन के कन्धे के पास आ खड़े हुए। ''बड़ी मज़ेदार चीज़ है,'' उन्होंने कहा।

जॉनाथन चकित रह गया था। वह स्वर्ग के बारे में पूछना भूल गया। ''यह आप कैसे करते हैं? इसमें लगता कैसा है? कितनी दूर जा सकते हैं आप?''

''तुम किसी भी जगह और किसी भी समय में जा सकते हो, जहाँ तुम जाना चाहो,'' मुखिया ने कहा। ''मैं हर जगह और हर समय में गया हूँ, जहाँ मैंने जाने की सोची है।'' उन्होंने दूर समुद्र के पार नज़र दौड़ायी।

''अजीब बात है। जो पंछी यात्रा की ख़ातिर पूर्णता को नीची नज़र से देखते हैं, वे धीरे-धीरे कहीं नहीं जाते। जो पूर्णता के लिए यात्रा को किनारे कर देते हैं, वे कहीं भी चले जाते हैं, तत्काल। याद रखो, जॉनाथन, स्वर्ग कोई जगह या समय नहीं है, क्योंकि जगह और समय इतने अधिक अर्थहीन हैं। स्वर्ग तो...''

''क्या आप मुझे उस तरह उड़ना सिखा सकते हैं?'' जॉनाथन सीगल एक और अनजान चीज़ को जीतने के लिए छटपटा रहा था।

''बिलकुल, अगर तुम सीखना चाहो।''

''चाहता हूँ। हम कब शुरू कर सकते हैं?''

''हम अभी शुरू कर सकते हैं, अगर तुम चाहो।''

''मैं चाहता हूँ उस तरह उड़ना सीख लूँ,'' जॉनाथन ने कहा और उसकी आँखों में एक अजीब-सी रोशनी चमक उठी। ''मुझे बताइए क्या करना है।''

चियाँग धीरे-धीरे बोले और बेहद गौर से उम्र में अपने से छोटे समुद्री पंछी को देखते रहे।

''विचार की रफ़्तार से उड़ना - यानी कहीं पहुँचने के लिए'' उन्होंने कहा, ''तुम्हें यह जानते हुए शुरू करना चाहिए कि तुम वहाँ पहले ही पहुँच चुके हो...''

चियाँग के अनुसार तरकीब यह थी कि जॉनाथन ख़ुद को ऐसे छोटे शरीर के भीतर कैद मानना बन्द कर दे जिसके डैनों की चौड़ाई बयालीस इंच थी और जिसकी उड़ान नक़्शे पर अंकित की जा सकती थी। तरकीब यह जान लेने में थी कि उसकी सच्ची प्रकृति, किसी न लिखी गयी संख्या

की तरह पूर्ण, स्थान और समय के विस्तार के अनुरूप हर जगह उसी समय जीवंत थी।

• • •

जॉनाथन इस काम में जुटा रहा, जी-जान से, हर दिन, सूरज उगने से पहले से लेकर आधी रात के बाद तक। और अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद वह अपनी जगह से रत्ती भर नहीं सरक पाया।

''आस्था को भूल जाओ,'' चियाँग ने बार-बार कहा। ''उड़ने के लिए तुम्हें आस्था की ज़रूरत नहीं है, तुम्हें उड़ान समझने की ज़रूरत है। यह भी वैसा ही है। अब फिर से कोशिश करो...''

फिर एक दिन जॉनाथन को तट पर खड़े हो कर, आँखें बन्द करके, ध्यान केन्द्रित करते हुए, एक चमक की तरह यह पता चल गया कि चियाँग उसे क्या बता रहे थे। ''अरे, यह तो बिलकुल सच है। मैं एक पूर्ण, सीमा के बंधन से मुक्त समुद्री पंछी हूँ!'' उसे आनन्द की गहरी अनुभूति हुई।

''बढ़िया!'' चियाँग ने कहा। उनकी आवाज़ में विजय की ख़ुशी थी।

जॉनाथन ने अपनी आँखें खोलीं। वह मुखिया के साथ अकेले एक बिलकुल अलग सागर-तट पर खड़ा था - पेड़ पानी की सतह तक झुके हुए थे और सिर के ऊपर दो पीले रंग के सूर्य घूम रहे थे।

''आख़िरकार तुम्हें बात समझ में आ गयी,'' चियाँग ने कहा, ''लेकिन तुम्हारे नियन्त्रण पर कुछ और काम करने की ज़रूरत है...''

जॉनाथन हक्का-बक्का था। ''हम कहाँ हैं?''

उस अजीब-से परिवेश से पूरी तरह अप्रभावित, मुखिया ने उसके सवाल को नज़रअन्दाज़ कर दिया। ''हम ज़ाहिर तौर पर किसी और ग्रह पर हैं, जिसका आकाश हरा है और दो सूर्य हैं।''

जॉनाथन ने ख़ुशी से चीख़ मारी – धरती को छोड़ने के बाद से यह पहली आवाज़ थी, जो उसके मुँह से निकली थी। ''यह तरीक़ा तो काम करता है!''

''अरे, यक़ीनन काम करता है, जॉन,'' चियाँग ने कहा। ''जब तुम्हें पता हो कि तुम क्या कर रहे हो तो वह हमेशा काम करता है। अब रहा सवाल तुम्हारे नियन्त्रण का...''

• • •

जब तक वे लौटे, अँधेरा हो चुका था। दूसरे सीगल्स ने अपनी सुनहरी आँखों में विस्मय के साथ जॉनाथन को देखा, क्योंकि उन्होंने उसे उस जगह से ग़ायब होते देखा था, जहाँ वह इतने दिनों तक टिका रहा था।

उसने उनकी बधाई बस मिनट भर से भी कम स्वीकार की। ''मैं यहाँ नया-नया आया हूँ। मैं अभी शुरू कर रहा हूँ। मुझे आपसे सीखना है।''

''मैं इसी के बारे में सोचता हूँ, जॉन,'' सलिवन ने पास खड़े-खड़े कहा। ''मैं दस हज़ार साल से देखता आ रहा हूँ, तुम्हारे अन्दर सीखने को ले कर किसी भी समुद्री पंछी की के मुकाबले, डर कम है।'' झुण्ड में ख़ामोशी छा गयी और जॉनाथन झेंप कर कसमसाने लगा।

''अगर तुम चाहो तो हम समय को लेकर काम करना शुरू कर सकते हैं,'' चियाँग ने कहा, ''जब तक तुम अतीत और भविष्य से उबरना नहीं सीख जाते। और फिर तुम सबसे मुश्किल, सबसे ताक़तवर और सबसे ज़्यादा मज़ेदार पहलू को शुरू करने के लिए तैयार हो जाओगे। तुम ऊपर उड़ने और दया एवं प्रेम का मतलब समझने के लिए तैयार हो जाओगे।''

एक महीना बीत गया या कुछ ऐसा जो महीने जैसा लगा और जॉनाथन बहुत तेज़ी से सीखता रहा। वह आम अनुभवों से बहुत जल्दी सीख लिया करता था और अब ख़ुद मुखिया का विशेष शिष्य बन कर, वह नये विचारों को इस तरह ग्रहण करता जैसे वह कोई पंखों और डैनों वाला चुस्त-दुरुस्त कम्प्यूटर हो।

लेकिन फिर वह दिन आया जब चियाँग ग़ायब हो गये। वे बड़ी शान्ति से उन सबसे बात करते रहे थे, उन पर ज़ोर देते रहे थे कि उन्हें कभी सीखना और अभ्यास करना तथा समूचे जीवन के पूर्ण अदृश्य सिद्धान्त को समझने की कोशिश करना बन्द नहीं करना चाहिए। फिर, बोलने के दौरान ही उनके पंख उज्ज्वल से उज्ज्वल होते चले गये और अन्त में इतने चमकदार हो गये कि किसी समुद्री पंछी की नज़रें उन पर टिक नहीं पा रही थीं।

"जॉनाथन," उन्होंने कहा और ये आख़िरी शब्द थे, जो उन्होंने कहे, "प्रेम पर काम करते रहना।"

जब वे दोबारा देखने लायक हुए तो चियाँग जा चुके थे।

जैसे-जैसे दिन बीते, जॉनाथन ने पाया कि वह कभी-कभार उस दुनिया के बारे में सोचने लगा था जहाँ से वह आया था। अगर वहाँ उसे इसका सिर्फ़ दसवाँ, सिर्फ़ सौवाँ हिस्सा मालूम होता जो वह यहाँ जानता था, तो जीवन कितना अधिक अर्थपूर्ण हो गया होता। उसने रेत पर खड़े हो कर सोचा कि क्या वहाँ पीछे कोई समुद्री पंछी होगा, जो अपनी सीमाओं से छूट कर बाहर आने के लिए संघर्ष कर रहा हो, जो यह देखने की कोशिश कर रहा हो कि उड़ने का मतलब महज़ किसी नाव से रोटी का एक टुकड़ा पाने के लिए यात्रा करने से ज़्यादा है। शायद कोई ऐसा भी हो जिसे झुण्ड के सामने सच बोलने के लिए झुण्ड से निकाल भी दिया गया हो।

और हुआ यह कि जितना अधिक जॉनाथन दया का सबक सीखने का अभ्यास करता, जितना अधिक वह प्रेम के स्वभाव को जानने का प्रयास करता, उतना ही अधिक उसके अन्दर पृथ्वी पर वापस जाने की इच्छा बढ़ती जाती। क्योंकि अपने अतीत में जॉनाथन सीगल चाहे जितना अकेला रहा था, वह एक प्रशिक्षक, एक गुरु बनने के लिए पैदा हुआ था और प्रेम को प्रकट करने का उसका अपना तरीक़ा सिर्फ़ एक था - जो सत्य उसने देखा था, उसका कुछ हिस्सा उस सीगल को दे जो ख़ुद सत्य को देखने का सिर्फ़ एक मौक़ा चाहता हो।

सलिवन ने, जो अब तक विचार की गति वाली उड़ान में माहिर हो चुका था और दूसरों को सीखने में मदद कर रहा था, सन्देह प्रकट किया था।

"जॉन, तुम्हें एक बार झुण्ड से निकाल दिया गया था। तुम्हें क्यों लगता है कि तुम्हारे पुराने समय के सीगल अब तुम्हारी बात सुनेंगे? तुम्हें वह कहावत तो मालूम ही है, और वह सच भी है : *जो सीगल जितना ऊँचा उड़ता है, उतनी दूर तक देख सकता है।* जहाँ से तुम आये थे वहाँ के सीगल्स ज़मीन पर खड़े हैं, चीख़ते-चिल्लाते और आपस में लड़ते। वे स्वर्ग से हज़ार मील दूर हैं - और तुम कहते हो कि जहाँ वे खड़े हैं, वहीं से तुम उन्हें स्वर्ग दिखाओगे! जॉन, वे तो अपने डैनों के छोर तक नहीं देख सकते! यहीं रहो, यहीं नये सीगल्स की मदद करो। जो इतना ऊँचे पहुँच गये हैं कि जो तुम उन्हें बताना चाहते हो, वे उसे देख सकते हैं।" वह पल भर ख़ामोश रहा और फिर उसने कहा, "क्या होता अगर चियाँग अपने पुराने संसार में लौट गये होते? कहाँ होते तुम आज?"

आख़िरी बात ही असरदार थी और सलिवन सही था। *जो समुद्री पंछी जितना ऊँचा उड़ता है, उतनी दूर तक देख सकता है।*

जॉनाथन वहीं रुक कर नये-नये आने वाले पंछियों के साथ काम करता रहा जो सब-के-सब अपने सबक सीखने में होशियार और तेज़ थे। लेकिन वह पुरानी भावना फिर लौट आयी और वह सोचे बिना रह नहीं सका कि पीछे पृथ्वी पर एक या दो समुद्री पंछी ऐसे हो सकते हैं जो सीखने के योग्य हों। अब तक वह कितना कुछ सीख गया होता अगर चियाँग उस दिन उसे मिल गये होते जिस दिन उसे झुण्ड से निकाल दिया गया था।

"सली, मुझे वापस जाना ही होगा," उसने आख़िरकार कहा। "तुम्हारे शिष्य अच्छा काम कर रहे हैं। वे नये आने वालों को सिखाने में तुम्हारी मदद कर सकते हैं।"

सलिवन ने साँस छोड़ी, लेकिन उसने बहस नहीं की। "मेरा विचार है तुम्हारी कमी मुझे खलेगी, जॉनाथन," उसने बस इतना ही कहा।

"कैसी बात करते हो, सलिवन!" जॉनाथन ने कहा, "और बेवकूफ़ी मत करो। हम हर रोज़ किस चीज़ का अभ्यास करने की कोशिश कर रहे हैं? अगर हमारी दोस्ती जगह और समय जैसी चीज़ों पर निर्भर है तो जब अन्ततः हम स्थान तथा समय को जीत लेंगे, हम ख़ुद अपनी बिरादरी नष्ट कर देंगे। लेकिन स्थान जीत लो तो हमारे पास बस यही जगह बचती है। समय को जीत लो तो कुल जमा जो बचता है वह है - अब। और तुम नहीं सोचते कि यहाँ और अब के बीच हम एक-दूसरे को एक या दो बार देख सकते हैं?"

सलिवन सीगल न चाहते हुए भी हँस पड़ा। "अरे, पागल पक्षी" उसने नरमी से कहा। "अगर कोई उसे, जो ज़मीन पर खड़ा है, हज़ार मील तक देखना सिखा सकता है, तो वह जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल ही होगा।" उसने रेत की तरफ़ देखा। 'अलविदा, जॉन। अलविदा मेरे दोस्त।"

"अलविदा सली। हम फिर मिलेंगे।" और इसी के साथ जॉनाथन ने एक अन्य काल के तट पर समुद्री पंछियों के विशाल झुण्डों की परिकल्पना की। अभ्यास की सरलता से वह जान गया कि वह हड्डी और पंख का ढेर नहीं, बल्कि आज़ादी और उड़ान का पूरा और सच्चा विचार है - और किसी चीज़ की सीमाओं में बँधा हुआ नहीं।

फ़्लेचर लिण्ड सीगल अभी बहुत छोटा था, लेकिन अभी से वह जान गया था कि किसी भी पंछी के साथ किसी भी झुण्ड ने ऐसा कड़ा और सख़्त बरताव नहीं किया था और न ऐसी नाइन्साफ़ी ही की थी।

"मुझे परवाह नहीं है कि वे क्या कहते हैं," उसने जोश और गुस्से से सोचा तथा दूर स्थित चट्टानों की तरफ़ उड़ते हुए उसकी आँखें धुँधला गयीं। "उड़ान में और भी बहुत कुछ है। महज़ डैने फड़फड़ाते हुए एक जगह से दूसरी जगह जाना ही नहीं है। *इतना तो एक... एक... मच्छर भी*

कर लेता है। मुखिया पंछी के इर्द-गिर्द मजे के लिए एक छोटा-सा तेज़ चक्कर क्या काटा, मुझे झुण्ड से निकाल दिया! क्या वे अन्धे हैं? क्या वे उस आन-बान-शान के बारे में नहीं सोच पाते जो उस समय होगी जब हम सचमुच उड़ना सीख जायेंगे?

"मुझे परवाह नहीं है कि वे क्या सोचते हैं। मैं उन्हें दिखाऊँगा कि उड़ना किसे कहते हैं। अगर वे ऐसा ही चाहते हैं तो मैं पूरी तरह नियम तोड़ने लगूँगा। और मैं उन्हें इतना दुखी करूँगा..."

वह आवाज़ उसके अपने दिमाग़ के भीतर आयी थी। हालाँकि वह बहुत नरम थी, उसने इस कदर उसे चौंका दिया कि वह अटका और हवा में डगमगा गया।

"मन में उनके लिए ऐसी कड़ी और कड़वी भावना मत रखो, फ़्लेचर सीगल। तुम्हें झुण्ड-निकाला देते हुए दूसरे सीगल्स ने सिर्फ़ अपने-आप को ही चोट पहुँचायी है और एक दिन उन्हें इस बात का पता चलेगा। एक दिन वे देखेंगे जो तुम देखते हो। उन्हें माफ कर दो और समझने में उनकी मदद करो।"

उसके दायें डैने के छोर से एक इंच के फ़ासले पर दुनिया का सबसे उज्ज्वल सफ़ेद समुद्री पंछी उड़ रहा था। वह बिना प्रयास आगे को बिना एक भी पंख हिलाये बहता चला जा रहा था और वह भी ऐसी गति से जो फ़्लेचर की करीब-करीब सबसे तेज़ रफ़्तार थी।

युवा पंछी के अन्दर पल भर के लिए सबकुछ उलट-पुलट-सा हो गया।

"क्या हो रहा है? क्या मैं पागल हूँ? क्या मैं मर गया हूँ? यह सब है क्या?"

धीमी और शान्त वह आवाज़ उसके सवालों के भीतर उत्तर की माँग करती हुई जारी रही। "फ़्लेचर लिण्ड सीगल, क्या तुम उड़ना चाहते हो?"

"हाँ, मैं उड़ना चाहता हूँ।"

‘‘फ़्लेचर लिण्ड सीगल, क्या तुम्हारे अन्दर उड़ने की इतनी इच्छा है कि तुम झुण्ड को माफ कर दोगे, और सीखोगे, और एक दिन वापस उनके पास जाकर उन्हें यह जानने में मदद करोगे?’’

इस शानदार और कुशल प्राणी से झूठ बोलने का कोई तरीक़ा नहीं था, भले ही फ़्लेचर सीगल गर्वीला और बुरी तरह आहत पक्षी था।

‘‘मैं करूँगा,’’ फ़्लेचर ने आहिस्ता से कहा।

‘‘तो फिर आओ फ़्लेचर,’’ उस चमकदार प्राणी ने उससे कहा और वह आवाज़ बहुत नरम थी, ‘‘आओ, हम सपाट उड़ान से शुरू करें...’’

जॉनाथन दूर स्थित सीधी चट्टानी कगार के ऊपर धीरे-धीरे चक्कर काटते हुए नज़र रख रहा था। यह अनाड़ी युवा फ़्लेचर गल उड़ान सीखने वाला करीब-करीब बेजोड़ शिष्य था। वह ताक़तवर और हलका तथा हवा में तेज़ था, लेकिन इससे भी बड़ी बात यह थी कि उसके अन्दर उड़ना सीखने की ज़बरदस्त इच्छा थी।

लो, वह आ रहा था, इसी पल, ग़ोता से बाहर निकलता हुआ। धुँधला सलेटी आकार, अपने प्रशिक्षक के पास से एक सौ पचास मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से कौंधता हुआ। उसने अचानक रुक कर सोलह चरण वाले सीधे खड़े धीमे चक्कर को एक बार और आजमाने की कोशिश की, चरणों को ऊँची आवाज़ में गिनते हुए।

''...आठ ...नौ ...दस ...देखो जॉनाथन, मेरी हवाई रफ़्तार कम हो रही है... ग्यारह... मुझे तुम्हारे जैसा अच्छा सटीक रूकाव चाहिए... बारह... लेकिन मैं बस कर ही नहीं पा रहा... तेरह... ये आख़िरी तीन चरण... बिना... चौदह...!''

फ़्लेचर ने शिखर पर अचानक जो झटका खाया था, वह विफल होने पर उसकी खीझ और क्रोध की वजह से और भी ज़ोर से लगा था। वह पीछे को गिरा, लुढ़का, उलटी फिरकी में बुरी तरह जा फँसा और आख़िरकार अपने प्रशिक्षक से सौ फ़ीट नीचे हाँफता हुआ फिर से स्थिर हुआ।

''तुम मेरे साथ अपना समय जाया कर रहे हो, जॉनाथन! मैं बिलकुल बुद्धू हूँ। मूढ़ हूँ मैं। मैं कोशिश-पर-कोशिश करता हूँ, लेकिन कभी सफल नहीं हो पाता।''

जॉनाथन सीगल ने नीचे उसकी तरफ़ देखा और सिर हिलाया। ''इतना तो तय है कि जब तक तुम वह शुरुआती झटका इतना सख़्त

रखोगे, फ़्लेचर, तब तक तुम इसे कर नहीं पाओगे। फिरकी में दाख़िल होते ही तुमने चालीस मील प्रति घण्टा की रफ़्तार गँवा दी थी। तुम्हें रवानी और नरमी के साथ चलना है। मज़बूती से मगर रवानी के साथ। याद रखना।''

वह उतर कर युवा समुद्री पंछी के बराबर चला आया। ''आओ, अब साथ में कोशिश करें, व्यूह बना कर। और ऊपर जाते समय ध्यान रखना। यह एक निर्विघ्न, आसान प्रवेश होना चाहिए।''

• • •

तीन महीने खत्म होते-होते, जॉनाथन के पास छह और शिष्य आ गये थे। सबके सब झुण्ड से निकाले हुए, फिर भी महज़ उड़ने के आनन्द के लिए उड़ने के इस अजीब-से नये विचार के बारे में जानने को उत्सुक।

इसके बावजूद, उनके लिए ऊँचे करतब कर दिखाना या उसका अभ्यास करना उस सब के पीछे के कारणों को समझने से ज़्यादा आसान था।

''हममें से हरेक दरअसल, उस महान समुद्री पंछी का एक विचार है, आज़ादी का एक असीम विचार है,'' जॉनाथन सागर-तट पर शाम को कहा करता, ''सटीक बेजोड़ उड़ान हमारे लिए अपने स्वभाव को प्रकट करने की तरफ़ एक कदम है। हर चीज़ जो हमें सीमित करती है, उसे हमें किनारे कर देना है। इसीलिए तो है यह सब तेज़ रफ़्तार का अभ्यास और धीमी गति तथा हवाई कलाबाज़ियाँ...''

...और उसके शिष्य दिन भर की उड़ानों से थक कर सो जाते। उन्हें अभ्यास पसन्द था, क्योंकि वह तेज़ और मज़ेदार था तथा सीखने की उस भूख को सन्तुष्ट करता था, जो हर सबक के साथ बढ़ती जाती थी। लेकिन उनमें से एक भी - फ़्लेचर लिण्ड गल भी - यह विश्वास नहीं कर पाया था कि विचारों की उड़ान सम्भवत: उतनी ही असली हो सकती थी, जितनी हवा और पंख की।

"तुम्हारा पूरा शरीर, एक डैने के छोर से दूरे डैने के छोर तक" दूसरे मौकों पर जॉनाथन कहता, "ख़ुद तुम्हारे विचार के अलावा और कुछ नहीं है – एक ऐसे रूप में जिसे तुम देख सकते हो। अपने विचारों के बंधन तोड़ दो और तुम अपने शरीर के बंधन भी तोड़ देते हो..." लेकिन वह चाहे जैसे इस बात को कहता, वह सुनने में एक सुखद कहानी लगती, और उन्हें नींद की ज़रूरत ज़्यादा थी।

इसके एक महीने बाद ही जॉनाथन ने कहा कि झुण्ड के पास वापस जाने का समय आ गया था।

"हम तैयार नहीं हैं!" हेनरी कैल्विन गल ने कहा। "हमारा स्वागत नहीं होगा। हम बाहर निकाले गये हैं। जहाँ हमारा स्वागत-सत्कार न हो, वहाँ हम ज़बरदस्ती अपने को थोप नहीं सकते।"

"हम जहाँ चाहें वहाँ जाने के लिए और जो बनना चाहें वह बनने के लिए आज़ाद हैं," जॉनाथन ने जवाब दिया और वह रेत से ऊपर उठा और झुण्ड के निवास स्थान की दिशा में पूरब की ओर मुड़ा।

उसके शिष्यों में थोड़ी चिन्ता और बेचैनी फैल गयी, क्योंकि यह झुण्ड का क़ानून है कि जिसे झुण्ड से निकाल दिया गया हो, वह कभी वापस नहीं आता। यह क़ानून दस हज़ार साल में एक बार भी नहीं टूटा था। क़ानून कहता था – रुको; जॉनाथन कहता था – चलो; और अब तक वह पानी के ऊपर से एक मील का फ़ासला पार कर चुका था। अगर वे और रुके तो वह अकेला ही नाराज़ झुण्ड का सामना करेगा।

"ख़ैर, अगर हम झुण्ड का हिस्सा न हों तो हमें नियमों का पालन करने की ज़रूरत नहीं है, है न?" फ़्लेचर ने थोड़ा सकुचाते हुए कहा। "इसके अलावा, अगर झगड़ा होता है तो हम यहाँ रुके रहने की बजाय वहाँ ज़्यादा मदद कर सकेंगे।"

इसलिए उस सुबह उन्होंने पश्चिम से उड़ान भरी, आठों-के-आठों ने, दोहरे चौकोर व्यूह में, डैने लगभग एक-दूसरे से टकराते हुए। वे झुण्ड के परिषद वाले तट पर एक सौ पैंतीस मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से

पहुँचे – जॉनाथन सबसे आगे, फ़्लेचर इत्मीनान से उसकी दायीं तरफ़, हेनरी कैल्विन बायीं तरफ़ अपनी जगह पर बने रहने के लिए भरसक कोशिश करता हुआ। फिर व्यूह में शामिल वे सब–के–सब, मानो एक पक्षी हों, धीरे से दायीं ओर को घूमे... एक जैसे... उलटे... फिर हवा के थपेड़ों का मुकाबला करने लगे।

झुण्ड में रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की चीख़–पुकार इस प्रकार शान्त हो गई मानो ऊपर उड़ रहा व्यूह एक विशाल चाकू हो जिसने आवाज़ों को बीच ही में काट दिया हो। पंछियों की आठ हज़ार आँखें बिना झपके इस दृश्य को देखती रहीं। एक–एक करके आठों पंछी तेज़ी से ऊपर एक गोलाकार चक्कर काट कर अपने पैरों पर बेहद धीरे रेत पर आ उतरे। फिर, मानो ऐसा हर रोज़ होता रहता हो, जॉनाथन सीगल ने उड़ान की समीक्षा शुरू कर दी।

"पहली बात तो यह है," उसने एक व्यंग्य–भरी मुस्कान के साथ कहा, "तुम सबने शामिल होने में थोड़ी देर कर दी थी..."

बिजली की तेज़ी से यह बात झुण्ड में फैल गयी – ये सीगल्स तो निकाले हुए हैं। और ये वापस आये हैं। और यह... यह हो नहीं सकता। फ़्लेचर ने लड़ाई की जो भविष्यवाणियाँ की थीं, वे झुण्ड की उथल–पुथल में खो गयीं।

"ख़ैर, ठीक है, वे निकाले गये हो सकते हैं," कुछ कम उम्र वाले सीगल्स ने कहा, "लेकिन इन पंछियों ने इस तरह उड़ना कहाँ से सीखा?"

मुखिया के आदेश को पूरे झुण्ड में फैलने में एक घण्टा लगा : उन्हें नज़रअन्दाज़ कर दो। जो पंछी निकाले गये समुद्री पंछियों से बात करेगा, वह भी निकाला गया माना जायेगा। जो निकाले गये पंछियों की देख–रेख करेगा, वह झुण्ड के नियमों को तोड़ेगा।

सलेटी पंखों वाली पीठें उस क्षण से जॉनाथन की तरफ़ फेर दी गयीं, पर उसने ऐसा दिखाया मानो उसने इस पर गौर ही न किया हो।

उसने परिषद वाले तट के ठीक ऊपर अभ्यास सत्र शुरू कर दिया और पहली बार अपने शिष्यों को उनकी क्षमता की सीमा तक जाने के लिए प्रेरित करना शुरू किया।

''मार्टिन गल!'' उसने गगनभेदी आवाज़ में चिल्ला कर कहा, ''तुम्हारा कहना है कि तुम्हें धीमी गति की उड़ान आती है। जब तक तुम इसे साबित नहीं करते, तब तक माना जाएगा कि तुम कुछ नहीं जानते। उड़ कर दिखाओ!''

तो, शान्त नन्हा मार्टिन विलियम सीगल, अपने प्रशिक्षक की झिड़की से चौंक कर ख़ुद-ब-ख़ुद धीमी गति का जादूगर बन गया। हल्की-से-हल्की हवा में वह अपने परों को घुमा कर, रेत से बादल तक और फिर वापस - डैने को बिना एक बार भी फड़फड़ाये - उड़ सकता था। चार्ल्स-रोनाल्डगल की तरह ग्रेट माउंटेन विंड चौबिस हज़ार फिट तक उड़ा। आसमान से ठंडी हल्की हवा को चीरता हुआ आया। विस्मित और ख़ुश अगले दिन और ऊँचा उड़ने के लिए प्रतिबद्ध।

किसी भी दूसरे समुद्री पंछी के मुक़ाबले कलाबाज़ी को ज़्यादा पसन्द करने वाले फ़्लेचर सीगल ने सोलह चरण वाली सीधी खड़ी फिरकी तो करके दिखायी ही, इसके अलावा अगले दिन पंजों के बल तिहरा चक्कर काट कर भी दिखाया। सूरज की उजली किरणें उसके पंखों से टकरा कर सागर-तट पर कौंध रही थीं, जहाँ से एक से ज़्यादा आँखें चोरी-छिपे उसे देख रही थीं।

हर घण्टे जॉनाथन अपने प्रत्येक शिष्य के बगल में उड़ रहा होता - करके दिखाता, सुझाव देता, दबाव डालता, तरीके बताता। वह उनके साथ, महज़ उड़ान के आनन्द के लिए, रात और बादल तथा तूफ़ान में उड़ता, जबकि झुण्ड ज़मीन पर दुखी हो कर दुबका रहता।

जब उड़ने का काम पूरा हो जाता, सभी शिष्य रेत पर आराम करते। समय के साथ वे जॉनाथन की बातों को और अधिक ध्यान से सुनने लगे। उसके पास कुछ अजीबो-ग़रीब विचार थे, जो वे समझ न पाते, लेकिन उसके पास कुछ अच्छे विचार भी थे, जिन्हें वे समझ सकते थे।

धीरे-धीरे, रात के समय, शिष्यों के घेरे के गिर्द एक और घेरा बनता चला गया - उत्सुक समुद्री पंछियों का घेरा, जो अँधेरे में बिना एक-दूसरे को देखे, घण्टों तक सुनते और पौ फटने से पहले ग़ायब हो जाते।

वापसी के महीना भर बाद की बात है, जब झुण्ड से निकल कर पहले समुद्री पंछी ने रेखा पार की और उड़ना सीखने की इच्छा प्रकट की। यह इच्छा ज़ाहिर करते ही टेरेन्स लावेल गल एक अभिशप्त पंछी बन गया और उस पर झुण्ड से निकाले जाने का ठप्पा लग गया। वह जॉनाथन का आठवाँ शिष्य था।

अगली रात झुण्ड से कर्क मेनार्ड गल आया - रेत पर डगमगाता हुआ, अपने बायें डैने को घसीटता हुआ - और जॉनाथन के पैरों के पास गिर पड़ा।

''मेरी मदद करो,'' उसने बहुत आहिस्ता से कहा, ऐसे बात करते हुए जैसे मरने वाले करते हैं। ''मैं उड़ने से ज़्यादा और कुछ नहीं चाहता...''

''आओ, चलो फिर,'' जॉनाथन ने कहा। ''मेरे साथ ज़मीन से उठ कर ऊपर चलो और हम शुरू करते हैं।''

''आप समझ नहीं रहे हैं। मेरा डैना... मैं अपना डैना हिला नहीं सकता।''

''मेनार्ड गल, तुम्हें इस बात की पूरी आज़ादी है कि तुम वह बन सको जो तुम हो - तुम्हारा सच्चा, असली रूप - और कुछ भी तुम्हारे रास्ते में नहीं आ सकता। यह महान समुद्री पंछी का नियम है, बस यही नियम है।''

''क्या आप कह रहे हैं कि मैं उड़ सकता हूँ?''

''मैं कह रहा हूँ कि तुम मुक्त हो।''

इतनी ही आसानी और इतनी ही जल्दी से कर्क मेनार्ड गल ने अपने डैने फैलाये, बिना प्रयास किये, और अँधेरी रात की हवा में ऊपर को उड़ चला। पाँच सौ फ़ीट की ऊँचाई पर पहुँचने के बाद उसकी पुकार ने,

जितनी ऊँची आवाज़ में वह चीख़ सकता था, नींद में खोये झुण्ड को जगा दिया, *"मैं उड़ सकता हूँ। सुनो। मैं उड़ सकता हूँ।"*

सूरज के उगने तक शिष्यों के घेरे के बाहर लगभग एक हज़ार पक्षी खड़े हो कर मेनार्ड को देख रहे थे। उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि उन्हें कोई देख रहा है या नहीं और वे जॉनाथन सीगल को समझने की कोशिश करते हुए सुन रहे थे।

वह बहुत सीधी-सरल बातें कर रहा था - कि समुद्री पंछी के लिए उड़ना सही है, कि आज़ादी उसके अस्तित्त्व की प्रकृति है, कि जो भी इस आज़ादी के आड़े आता है, उसे किनारे कर दिया जाना चाहिए - चाहे वह कोई रस्म हो, अन्धविश्वास हो या किसी भी रूप में कोई पाबन्दी या सीमा हो।

"किनारे कर दिया जाना चाहिए?" भीड़ में से एक आवाज़ आयी, "चाहे वह झुण्ड का क़ानून हो?"

"सच्चा क़ानून वही है, जो आज़ादी की तरफ़ ले जाता है" जॉनाथन ने कहा, "इसके अलावा और कोई क़ानून नहीं है।"

"तुम हमसे अपनी तरह उड़ने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?" एक और आवाज़ आयी। "तुम ख़ास हो, प्रतिभाशाली हो, दैवी हो, दूसरे समुद्री पंछियों से ऊपर हो।"

"फ़्लेचर, लावेल, चार्ल्स रॉलैण्ड को देखो। क्या वे भी ख़ास, प्रतिभाशाली और दैवी हैं? नहीं, न तुमसे अधिक, न मुझसे ज़्यादा। फ़र्क़ बस इतना है, सिर्फ़ इतना कि वे यह समझने लगे हैं कि वे सचमुच क्या हैं और उन्होंने उसका अभ्यास शुरू कर दिया है।"

फ़्लेचर को छोड़ कर उसके शिष्य बेचैनी से कसमसाये। उन्हें यह एहसास ही नहीं हुआ था कि वे सही कर रहे थे।

भीड़ हर रोज़ पहले से बढ़ती गयी - सवाल करने, पूजने और उपेक्षा करने के लिए।

• • •

''झुण्ड में वे कह रहे हैं कि अगर तुम ख़ुद महान समुद्री पंछी के पुत्र नहीं हो,'' फ़्लेचर ने एक सुबह तेज़ गति के अभ्यास के बाद जॉनाथन से कहा, ''तो तुम अपने समय से हज़ार साल आगे हो।''

जॉनाथन ने लम्बी साँस छोड़ी। उसने सोचा, यही वह क़ीमत है, जो ग़लत समझे जाने पर हमें चुकानी पड़ती है। वे तुम्हें शैतान कहते हैं या वे तुम्हें भगवान कहते हैं। ''तुम्हारा क्या ख़याल है, फ़्लेचर? क्या हम अपने समय से आगे हैं?''

एक लम्बी ख़ामोशी छा गयी। ''ख़ैर, इस तरह उड़ना तो हमेशा से यहां रहा है और जो भी उसे खोज कर सीखना चाहता, वह उसे सीख सकता था; इसका समय से कुछ लेना-देना नहीं। शायद हम आम चलन से आगे हैं। जिस तरह ज़्यादातर सीगल्स उड़ते हैं, उससे आगे हैं।''

''यह कुछ बात हुई,'' जॉनाथन ने कुछ देर उलटे हो कर बिना पर मारे उड़ने के लिए पलटते हुए कहा। ''यह उतना बुरा नहीं है, जितना अपने समय से आगे होना।''

• • •

हफ़्ते भर बाद ही वह घटना हुई। फ़्लेचर नये शिष्यों की एक क्लास को तेज़-रफ़्तार से उड़ने के गुर समझाते हुए उड़ कर दिखा रहा था। वह अभी-अभी सात हज़ार फ़ीट की ऊँचाई से लगाए गए ग़ोते से बाहर आ रहा था - एक लम्बी सलेटी लकीर तट से कुछ इंच ऊपर फ़र्राटा भरती हुई - जब एक छोटा पंछी अपनी पहली उड़ान पर अपनी माँ को पुकारता हुआ अचानक सीधे उसके रास्ते में आ गया। उस बच्चे को बचाने के लिए सेकेण्ड के मात्र दसवें हिस्से में फ़्लेचर लिण्ड सीगल चुटकी बजा कर फौरन बायीं ओर पलटा और ठोस ग्रेनाइट की सीधी चट्टान से दो सौ मील प्रति घण्टा की रफ़्तार से जा टकराया।

उसे ऐसा लगा मानो वह चट्टान किसी और दुनिया में ले जाने वाला एक विशाल कठोर दरवाजा हो। जैसे ही वह टकराया, डर और

सदमे तथा कालिमा का एक विस्फोट हुआ। फिर वह एक विचित्र आकाश में बहता चला गया, भूलता हुआ, याद करता हुआ, भूलता हुआ; भयभीत और उदास और दुखी, बहुत दुखी।

वह आवाज़ ठीक उसी तरह उस तक आयी जैसे उस पहले दिन आयी थी, जब वह जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल से मिला था।

''फ़्लेचर, गुर यह है कि हम धीरज के साथ, सिलसिलेवार ढंग से अपनी सीमाओं के ऊपर उठने, उन्हें जीतने की कोशिश कर रहे हैं। चट्टान के बीच से होकर उड़ना हमारे कार्यक्रम में कुछ आगे चल कर आने वाला था।''

''जॉनाथन!''

''जो महान समुद्री पंछी के पुत्र के रूप में भी जाना जाता है,'' फ़्लेचर के गुरु ने रुखाई से कहा।

''तुम यहाँ क्या कर रहे हो? वह खड़ी चट्टान! क्या मैं... क्या मैं... मैं मरा नहीं?''

''अरे फ़्लेचर, छोड़ो भी। अगर तुम इस समय मुझसे बात कर रहे हो तो ज़ाहिर तौर पर तुम मरे नहीं, ठीक है न? तुमने जो किया, वह अपनी चेतना के स्तर को अचानक बदल देना कहलाता है। अब यह तुम्हारा चुनाव है। तुम इसी स्तर पर रह कर सीख सकते हो - जो, लगे हाथ तुम्हें बता दूं, यह उससे काफ़ी ऊँचा है, जिसे छोड़ कर तुम आये हो - या तुम वापस जा कर झुण्ड के साथ काम करते रह सकते हो। झुण्ड के मुखिया किसी किस्म के हादसे की उम्मीद लगाये बैठे थे, लेकिन तुमने उनकी उम्मीदें इतनी अच्छी तरह पूरी कीं, कि वे भी चौंक गये।''

''ज़रूर मैं वापस झुण्ड के पास जाना चाहता हूँ। मैंने नये समूह के साथ अभी मुश्किल से ही काम शुरू किया था।''

''ठीक है, फ़्लेचर। याद है न हम इस बारे में जो कह रहे थे कि हमारे शरीर बस विचार से बढ़ कर और कुछ नहीं हैं...?''

• • •

फ़्लेचर ने खड़ी चट्टान के तल पर, पूरे झुण्ड की मौजूदगी में अपना सिर झटका, अपने डैने फैलाये और अपनी आँखें खोलीं। जब वह पहले-पहल हिला तो भीड़ में चीख़ने-किकियाने का भारी शोर-गुल मचा।

''वह ज़िन्दा है, ज़िन्दा है। वह जो मर गया था, जी उठा है।''

''उसे डैने के छोर से छू कर ज़िन्दा कर दिया - महान समुद्री पंछी के पुत्र ने!''

''नहीं, वह इससे इनकार करता है। वह शैतान है। शैतान है, जो झुण्ड को तोड़ने आया है।''

भीड़ में चार हज़ार सीगल्स थे - जो हुआ था, उससे डरे हुए - और 'शैतान है!' की पुकार उन्हें चीरती चली गयी, जैसे समुद्री तूफ़ान की हवा। आँखें पथरायी हुईं, पैनी चोंच तेज़, उन्होंने आक्रमण करने के लिए घेरा बना लिया।

''अगर हम चल दें तो क्या तुम बेहतर महसूस करोगे, फ़्लेचर?'' जॉनाथन ने पूछा।

''अगर ऐसा हो तो यक़ीनन मुझे बहुत एतराज़ नहीं होगा...''

तत्काल वे एक-दूसरे के साथ आधा मील दूर खड़े थे और भीड़ की चमकती-कौंधती चोंचें ख़ाली हवा में वार कर के रह गयीं।

''क्या कारण है,'' जॉनाथन ने हैरत से कहा, ''कि दुनिया का सबसे मुश्किल काम है एक पक्षी को यह मनवाना कि वह आज़ाद है और ख़ुद अपने सामने साबित करे कि वह थोड़ा-सा समय अभ्यास में लगाये? यह इतना मुश्किल क्यों है?''

फ़्लेचर अब भी दृश्य के बदल जाने पर पलकें झपका रहा था। ''तुमने अभी-अभी क्या किया? हम यहाँ कैसे पहुँचे?''

''तुमने कहा था न कि तुम भीड़ से बाहर निकलना चाहते हो, क्यों?''

''हाँ, पर तुमने कैसे...''

"बाक़ी सब चीज़ों की तरह फ़्लेचर। अभ्यास से।"

• • •

सुबह होने तक झुण्ड अपना पागलपन भूल चुका था, लेकिन फ़्लेचर नहीं भूला था। "जॉनाथन, याद करो जो तुमने बहुत पहले कहा था - झुण्ड से इतना प्यार होने के बारे में कि वापस उसके पास जा कर उसे सीखने में मदद दी जाये?"

"हाँ।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि तुम पंछियों की उस भीड़ से कैसे प्यार कर सकते हो जिसने अभी-अभी तुम्हारी जान लेने की कोशिश की है?"

"ओह, फ़्लेचर, हम इसे प्यार नहीं करते। निश्चय ही, हम नफ़रत और बुराई से प्यार नहीं करते। तुम्हें अभ्यास करके उनमें से हरेक के भीतर असली पंछी को, अच्छाई को, देखना होता है और फिर उसकी मदद करनी होती है कि वे इसे अपने अन्दर देखें। प्यार से मेरा यही मतलब है। जब तुम्हें इसका गुर आ जाये तो यह मज़ेदार होता है।"

"मिसाल के लिए, मुझे एक ख़ूँखार युवा पंछी याद है, उसका नाम था - फ़्लेचर लिण्ड सीगल। अभी-अभी झुण्ड से निकाला गया, झुण्ड से अन्तिम साँस तक लड़ने को तैयार, दूर की खड़ी चट्टानों वाले कगार पर ख़ुद अपना पीड़ादायक नरक बनाने की दहलीज़ पर खड़ा हुआ। और इसके बदले आज वह यहाँ है, ख़ुद अपना स्वर्ग बनाता हुआ और पूरे झुण्ड को उस दिशा में ले जाता हुआ।"

फ़्लेचर अपने गुरु की तरफ़ मुड़ा और उसकी आँख में पल भर के लिए डर कौंधा। *"मैं ले जा रहा हूँ?* तुम्हारा मतलब क्या है - मैं ले जा रहा हूँ? यहाँ प्रशिक्षक तो तुम हो। तुम नहीं जा सकते।"

''नहीं जा सकता? तुम्हारे ख़याल में क्या दूसरे झुण्ड नहीं हो सकते, दूसरे फ़्लेचर, जिन्हें एक प्रशिक्षक की ज़रूरत इस झुण्ड से ज़्यादा है, जो रोशनी की दिशा में चल भी पड़ा है?''

''*मैं?* जॉन! मैं एक मामूली, सीधा-सादा समुद्री पंछी हूँ और तुम...''

''...महान समुद्री पंछी के एकमात्र पुत्र, मेरा ख़याल है?'' जॉनाथन ने साँस छोड़ी और समुद्र में दूर तक देखा। ''तुम्हें अब मेरी कोई ज़रूरत नहीं रह गयी है। तुम्हें अब ख़ुद को खोजने और पाने की ज़रूरत है, हर रोज़ थोड़ा और - उस असली, असीम फ़्लेचर सीगल को। वह तुम्हारा प्रशिक्षक है। तुम्हें उसे समझने और अभ्यास करने की ज़रूरत है।''

पल भर बाद हवा में जॉनाथन का शरीर झिलमिलाते हुए लहराया, और पारदर्शी होने लगा। ''उन्हें मेरे बारे में बेवकूफ़ी की अफ़वाहें मत फैलाने दो, न मुझे देवता बनाने दो। ठीक है, फ़्लेचर? मैं समुद्री पंछी हूँ। मुझे उड़ना पसन्द है, शायद...''

''*जॉनाथन!*''

''बेचारे फ़्लेचर। जो कुछ तुम्हारी आँखें तुम्हें दिखा रही हैं, उस पर विश्वास मत करो। जो वे दिखाती हैं, वह सीमित है। अपनी समझ के साथ देखो, खोजो उसे, जो तुम पहले ही से जानते हो और तुम उड़ने का तरीक़ा सीख जाओगे।''

झिलमिलाहट रुक गयी। जॉनाथन सीगल हवा में विलीन हो गया था।

कुछ समय बाद, फ़्लेचर गल ख़ुद को खींच कर आकाश में ले आया और उसने एकदम नये शिष्यों के समूह को सामने पाया, जो अपने पहले सबक के लिए आतुर थे।

''पहली बात यह है,'' उसने सख़्त लहजे में कहा, ''तुम्हें यह समझना होगा कि एक समुद्री पंछी आज़ादी का एक असीमित विचार होता है, महान समुद्री पंछी की छवि और तुम्हारी समूची देह एक डैने

के छोर से दूसरे डैने के छोर तक, ख़ुद तुम्हारे विचार के सिवा और कुछ नहीं है।''

युवा सीगल्स ने चकराये अन्दाज़ में उसकी तरफ़ देखा। अब चलो भी, उन्होंने सोचा, यह तो सुनने में कठोर नियम जैसा नहीं जान पड़ता।

फ़्लेचर ने लम्बी साँस छोड़ी और फिर से शुरू किया। ''अ... अ... ठीक है,'' उसने कहा और तीखी पारखी निगाह से उन्हें देखा। ''आओ, सीधी-सादी उड़ान से शुरू करें।'' और यह कहते हुए उसे एक बार में ही समझ में आ गया कि ईमानदारी से कहा जाये तो उसका दोस्त उतना ही दैवी था, जितना ख़ुद फ़्लेचर।

कोई सीमा नहीं, जॉनाथन? उसने सोचा। ख़ैर, वह समय दूर नहीं जब मैं तुम्हारे सागर-तट पर केवल हवा से प्रकट होने और तुम्हें उड़ने के बारे में, दो-एक चीज़ें दिखाऊँगा!

और हालाँकि अपने शिष्यों के सामने उसने समुचित ढंग से कठोर दिखने की कोशिश की, फ़्लेचर सीगल ने अचानक उन सबको वैसा ही देखा जैसे वे सचमुच थे, महज़ पल भर के लिए, और जो उसने देखा, वह उसे पसन्द आने से भी ज़्यादा अच्छा लगा, प्यारा लगा। कोई सीमा नहीं, जॉनाथन? उसने सोचा और मुस्कराया। सीखने के लिए उसकी दौड़ शुरू हो चुकी थी।

कुछ वर्षों के लिए,

जॉनाथन सीगल के समुद्र तटों के झुण्ड से ग़ायब हो जाने के बाद, यह पक्षियों का विचित्र समूह हो गया था जो शायद ही कभी पृथ्वी पर रहा हो। उनमें से कई ने वास्तव में उसका संदेश समझना शुरू कर दिया था जिसे कि वह लाया था। यह दृश्य आम हो गया था कि एक कम उम्र का सीगल ऊपर से नीचे उड़ता हुआ तथा छल्ले बनाने का अभ्यास करता दिखे। वहीं बुजुर्ग सीगल उड़ान की महिमा को महसूस करने के बजाय अपनी आँखें मूँदे रहते तथा सीधे व उबाऊ ढंग से उड़ते हुए मछली पकड़ने की नौकाओं के इर्द-गिर्द भीगी हुई ब्रेड का एक टुकड़ा पाने के लिए मंडराते रहते।

फ़्लेचर लिंड सीगल और जॉनाथन के अन्य छात्र समुद्र तट पर हर झुण्ड के लिए लंबे समय की मिशनरी यात्रा में अपने प्रशिक्षक की स्वतंत्रता और उड़ान संबंधी शिक्षाओं के प्रसार में लगे थे। उन दिनों उल्लेखनीय घटनाएँ हो रही थीं। फ़्लेचर के ख़ुद के छात्र, और उनके छात्रों के छात्र सटीक रूप से उड़ रहे थे तथा इस तरह की ख़ुशी पहले कभी नहीं देखी गई थी। यहाँ और वहाँ कुछ एकाकी पक्षी भी थे, जो अपने द्वारा सीखी गईं कलाबाज़ियाँ खा रहे थे, फ़्लेचर से भी बेहतर और कभी ख़ुद जॉनाथन द्वारा सिखाई गई उड़ान की तुलना में भी बेहतर। एक बेहद जोशीले सीगल के सीखने का दायरा तेज़ी से किसी भी ग्राफ से ऊपर जा रहा था। अब और तब वहाँ ऐसे छात्र भी थे, जिन्होंने सीमाओं को बहुत अच्छे से पार कर लिया था। वे जॉनाथन की तरह ऐसे ग़ायब हो जाते कि धरती का कोई छोर उनके लिए बेहद छोटा लगता।

यह थोड़ी देर के लिए, एक स्वर्ण युग के समान था। समुद्री पक्षियों की भीड़ फ़्लेचर को छूने के लिए उस पर झुकी हुई थी। उसने जॉनाथन सीगल को छुआ था, जिसे कि अब एक दिव्य पक्षी माना जाने लगा था।

व्यर्थ में ही फ़्लेचर ने ज़ोर देकर कहा कि जॉनाथन भी उन सब की तरह एक समुद्री पंछी है, जिसने जो कुछ सीखा उसे वे सब भी सीख सकते हैं। वे लगातार उसके पीछे पड़े रहते। जॉनाथन के सटीक शब्द सुनने के लिए, उसकी छोटी-छोटी भंगिमाओं, छोटी से छोटी बातों का पता लगाने के लिए। जरा-जरा सी बातों के लिए वे जितने ज़्यादा गिड़गिड़ाते, फ़्लेचर और अधिक असहज हो जाता। जब वे अभ्यास करने और आकाश में शानदार तरीके से तेज़ी से तथा मुक्त उड़ान भरने में रुचि लेने लगे, तो वे मुश्किल काम करने से बचने लगे। वे जॉनाथन से संबंधित कहानियों में हो रही निंदा के प्रति हमेशा पैनी निगाह रखते थे मानो वह एक प्रशंसक क्लब के लिए आदर्श बन चुका हो।

''सीगल फ़्लेचर,'' उन्होंने पूछा, ''क्या शानदार जॉनाथन ने यह कहा था, 'हम महान गल के बारे में सचमुच में विचार कर रहे हैं...' या यह कहा था, 'हम महान गल के बारे में *हक़ीक़त* में सोच रहे हैं'?''

''कृपया, मुझे फ़्लेचर कहो। बस फ़्लेचर सीगल,'' जब वह उनके द्वारा अपने प्रति कहे जा रहे सम्मानजनक शब्दों से चकित हो जाता, तो वह ऐसा जवाब देता। ''और इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि उसने किस शब्द का इस्तेमाल किया है? दोनों सही हैं, हम महान गल पर विचार कर रहे हैं...'' लेकिन वह जानता था कि वे उसके जवाब से संतुष्ट नहीं थे। वे सोचते थे कि वह उनके सवाल से बचना चाहता है।

''गल फ़्लेचर, दैवीय गल जॉनाथन उड़ान भरने के लिए कब उठे, क्या उन्होंने हवा की ओर एक कदम बढ़ाए... या दो?''

इससे पहले कि वह एक सवाल का सही जवाब दे पाता, एक और सवाल दाग दिया जाता।

''गल फ़्लेचर, क्या पवित्र गल जॉनाथन की आँखें भूरी हैं या सुनहरी?'' प्रश्नकर्ता भूरी आँखों वाला एक पक्षी था, जो सिर्फ़ एक ही जवाब मिलने से आक्रोशित था।

"मुझे नहीं पता! उसकी आँखों के बारे में भूल जाओ!" उसने कहा, "उसकी... बैंगनी आँखें हैं! इसका मतलब क्या निकलता है? क्या वह हमें यह बताने के लिए आया था कि यदि हम बस उठ कर और किसी की आँखों के रंग के बारे में बातें करें और समुद्र तट के चारों ओर खड़े होकर रुक जाएंगे, तो उड़ सकते हैं! अब देखो, और मैं तुम्हें एक नई तरह का मोड़ लेना दिखाता हूँ..."

लेकिन एक से अधिक समुद्री पंछियों ने इस मोड़ का अभ्यास करना काफ़ी मुश्किल होने का दिखावा करते हुए घर के लिए उड़ान भर ली। "उस महान सीगल की बैंगनी आँखें थीं - मेरी आँखों की तरह नहीं और ना ही किसी और गल की आँखों की तरह।"

जैसे-जैसे वर्ष बीते, कक्षाएं भी बदल गईं। उड़ान में लंबी-चौड़ी कविताएँ पढ़े जाने से लेकर अभ्यास के पहले और बाद में जॉनाथन के बारे में दबे स्वर में बात करने तक; उस दैवीय आत्मा के बारे में रेत पर देर तक गायन करने में शामिल होना, जिसके बराबर कभी किसी के द्वारा उड़ान नहीं भरी गई।

फ़्लेचर और जॉनाथन के अन्य छात्र बदलाव के प्रति हैरान थे, सुधार चाहते थे, दृढ़ थे और बेहद आक्रोशित भी, लेकिन वे इसे रोकने में असहाय थे। वे सम्मानित थे और सबसे बढ़कर श्रद्धेय भी, लेकिन अब लंबे समय से उनकी नहीं सुनी जा रही थी। उड़ान का अभ्यास करने वाले पक्षियों की संख्या कम से कम हो रही थी।

एक के बाद एक पुराने छात्रों का निधन हो रहा था, वे अपने पीछे ठंडे पड़े शवों को छोड़ते जाते थे। झुण्ड उन शवों को ढूंढ निकालता, उन्हें आंसुओं से भरा बड़ा समारोह आयोजित कर श्रद्धांजलि देता, फिर उन्हें भारी पत्थरों के नीचे दबाकर दफ़न कर देता। उस जगह पर प्रत्येक पत्थर रखे जाने के बाद आदर का पात्र एक पक्षी लंबा दुख भरा उपदेश देता। ऐसे पत्थरों के जमघट वाले स्थल धार्मिक स्थल बनते जा रहे थे। प्रत्येक समुद्री पंछी के लिए यह ज़रूरी अनुष्ठान हो गया था कि वह

एकजुटता की भावना दिखाने के लिए वहां एक पत्थर रखे तथा स्मारक पर दुखभरा भाषण दे।

किसी को भी पता नहीं था कि यह एकजुटता क्या है, लेकिन यह एक ऐसी गंभीर बात थी, जिसके बारे में कोई समुद्री पंछी इसलिए कभी नहीं पूछता था कि उसे मूर्ख न मान लिया जाए। हर कोई जानता है कि एकता क्या है, और वह गल मार्टिन के स्मारक पर सुंदर पत्थर चढ़ाकर वहाँ अपनी मौजूदगी के एहसास को और पुख़्ता बना देता।

आखिर में फ़्लेचर का भी निधन हो गया। यह सब हुआ एक ऐसी शुद्ध और सर्वाधिक सुंदर उड़ान के लंबे एकाकी सत्र के दौरान। ऐसी उड़ान उसने पहले कभी नहीं भरी थी। उसका शरीर धीमी गति से सीधे नीचे आने के दौरान ग़ायब हो गया। वह इसका अभ्यास जॉनाथन सीगल से पहली मुलाकात के बाद से ही कर रहा था। और जब वह ग़ायब हुआ तो न तो पत्थर रख रहा था और न ही एकजुटता के सूत्रों को याद कर रहा था। वह अपनी ही उड़ान की पूर्णता में खो गया।

जब अगले सप्ताह फ़्लेचर समुद्र तट पर नहीं दिखा और वह बिना कोई नोट छोड़े ग़ायब हो गया, तो झुण्ड कुछ समय तक सदमे में रहा।

इसके बाद वे फिर इकट्ठे हुए, और सोचा तथा तय किया गया कि क्या होना चाहिए। यह घोषणा की गई कि गल फ़्लेचर जिस स्थान पर पहले सात छात्रों से घिरा हुआ देखा गया था, उसे अब एकता की चट्टान के रूप में जाना जाएगा। फिर बादल छंट गये। स्वयं महान गल जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल पंखों की शाही पोशाक तथा सुनहरे खोल पहने दिखे। उन्होंने क़ीमती पत्थरों का मुकुट अपने माथे पर धारण कर आकाश, समुद्र, हवा और पृथ्वी के लिए प्रतीकात्मक रूप से इशारा किया। उसे एकजुटता के तट पर बुलाया। पवित्र किरणों से घिरा हुआ फ़्लेचर जादुई ढंग से उठा और सभी सीगल के स्वरों में महान कोरस के साथ बादलों ने दृश्य पर फिर से पर्दा डाल दिया।

और इसी तरह गल फ़्लेचर की पवित्र स्मृति में एकता की चट्टान पर पत्थरों का ढेर लगाया गया। वह ढेर पृथ्वी पर कहीं भी किसी भी समुद्र तट पर लगाये गये ढेरों में सबसे बड़ा था। अन्य ढेर प्रतिकृति के तौर पर हर जगह बनाये गये। प्रत्येक मंगलवार दोपहर को झुण्ड पत्थरों के चारों ओर जमा हो जाता तथा जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल और उसके दैवीय कृपा प्राप्त छात्रों के चमत्कारों के बारे में सुनता। जब तक बिल्कुल आवश्यक नहीं हो जाता, कोई भी बहुत ज़्यादा उड़ान नहीं भरता। जब उड़ान भरना आवश्यक हो ही जाता तो वे इसके बारे में और भी अजीबो-ग़रीब हरकतें करते नज़र आते। अधिक सक्षम पक्षियों ने अपनी हैसियत के एक प्रतीक के रूप में अपनी चोंच में पेड़ों से डालियां ले जाना शुरू कर दिया। जो भी पक्षी सबसे बड़ी और भारी डाली उठा कर ले जाता, वह झुण्ड का सबसे अधिक ध्यान खींचता। जिसकी शाखा जितनी बड़ी होती, उसे उतना ही अधिक प्रगतिशील उड़ने वाला माना जाता था।

गल समाज में कुछ पक्षियों ने महसूस किया कि अपने इर्द-गिर्द वज़न ढोने और उन डालियों को खींचने से सबसे भरोसेमंद सीगल्स परेशान करने वाले उड़ाके बन गये हैं। एक चिकना पत्थर जॉनाथन की शिक्षाओं का प्रतीक बन गया। फिर बाद में, कोई पुराना पत्थर इस काम के लिए ले लिया जाता। यह उस पक्षी के लिए सबसे ख़राब संभावित प्रतीक था, जो उड़ान की ख़ुशी के बारे में पढ़ाने के लिए आया था, लेकिन किसी ने भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया। कम से कम, ऐसे किसी गल ने नहीं जो झुण्ड में बड़ा हो।

मंगलवार को सभी उड़ानें बंद कर दी गईं और एक उदासीन भीड़ झुण्ड के आधिकारिक छात्र को सुनने के लिए एकत्र हो गई। कुछ ही सालों में स्तुति गान व्यवस्थित हो चुका था और ग्रेनाइट पत्थर पर लिख दिया गया था - "हे-जॉनाथन-गलक-महान-गलक- ओनीक-हम-पर-दया-करें-हम-जो-कीड़ों-से-भी-नीच-है...।" घंटे पर घंटे बीते, मंगलवार आ गया। अधिकारियों के लिए यह काबिलियत का एक प्रतीक बन गया था कि वे तेज़ आवाज़ों के साथ भागें। इससे वे यह नहीं समझ

पाते कि बोला क्या जा रहा है। कुछ ढीठ पक्षी भी फुसफुसाए कि आवाज़ का वैसे भी कुछ मतलब नहीं निकल रहा। भले ही उनमें से कोई यह समझ ले कि उस आवाज़ में कुछ शब्द भी शामिल हैं।

बलुआ पत्थर में तराशी गईं जॉनाथन की प्रतिमाओं को समुद्र तट के साथ लगा दिया गया था। इनमें उसे बेहद दुखी बैंगनी-पलकों वाली आँखों के साथ दिखाया गया था। उन्हें हर स्मारक और प्रतिकृति स्मारक में, पूजा केंद्रों में सर्वाधिक भारी चट्टान में तराश कर लगाया जाता।

दो सौ साल से भी कम समय में एक सरल घोषणा के साथ जॉनाथन की शिक्षा का लगभग हर तत्व दैनिक अभ्यास से बाहर ले जाया जा रहा था। वह शिक्षा यह थी कि यह पवित्र है और साधारण समुद्री पंछियों की उम्मीद से परे है। ये पंछी कीड़े-मकोड़ों से भी गए-गुजरे हैं। देखते ही देखते जो संस्कार और अनुष्ठान जॉनाथन सीगल के नाम पर चारों ओर चल रहे थे, कुछ ही समय के भीतर आडंबरपूर्ण हो गए थे। कोई भी सोच-विचार करने वाला समुद्री पंछी हवा में ही रास्ता बदल लेता ताकि स्मारक के ऊपर से न उड़ना पड़े। वे वहां समारोह आयोजित करते और वैसे अंधविश्वासी हो रहे थे, जो कि मेहनत करने के बजाय अपनी विफलता के लिए माफी माँगें और महानता को याद करें। सोचने वाले समुद्री पंछी विरोधाभास के तौर पर ''उड़ान'', ''स्मारक'', ''महान गल'', ''जॉनाथन'' जैसे शब्द सुनकर अपना दिमाग़ बंद कर लेते। अन्य मामलों में वे बेहद स्पष्ट थे और ईमानदार पंछी थे, जैसा कि ख़ुद जॉनाथन था। लेकिन वे उसके नाम की चर्चा होने पर या आधिकारिक स्थानीय छात्रों के द्वारा कोई गुस्ताख़ी होने पर अपना दिमाग़ तत्काल बंद कर लेते। ठीक उसी तरह जिस तरह शिकार के लिए लगाया गया पिंजरा आवाज़ के साथ बंद हो जाता है।

चूंकि वे बेहद उत्सुक थे, अत: उन्होंने उड़ान संबंधी प्रयोग शुरू किये। हालांकि उन्होंने कभी भी इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। ''यह उड़ान नहीं है,'' वे ख़ुद को बार-बार विश्वास दिलाते। ''इसका पता लगाने का केवल यही एक रास्ता बचा है कि सच क्या है।'' ऐसे में वे

''छात्रों'' को ठुकराने में ख़ुद छात्र बन गए। जॉनाथन सीगल का नाम ख़ारिज करने में दिलचस्पी लेने के बजाय वे उसके द्वारा झुण्ड को दिए गए संदेश का अभ्यास करने लगे।

यह कोई शोर वाली क्रांति नहीं थी; कोई चीख़-चिल्लाहट नहीं मची, वहां कोई बैनर नहीं लहराए जाते। लेकिन ऐंथनी सीगल जैसे कुछ इने-गिने पंछी, उदाहरण के लिए जिनके पंख पूरी तरह से मज़बूत नहीं हुए थे, सवाल पूछने लगे।

''अब देखो,'' उन्होंने अपने आधिकारिक स्थानीय छात्र से कहा, ''हर मंगलवार को आपको सुनने के लिए आने वाले पक्षी तीन कारणों से आते हैं, आते हैं न? क्योंकि उन्हें लगता है कि वे कुछ सीख रहे हैं; क्योंकि वे सोचते हैं कि स्मारक पर एक और पत्थर चढ़ाकर वे पवित्र बन जाएँगे, या इसलिए कि हर कोई उनके वहाँ होने की उम्मीद करता है। है ना?''

''और तुम्हारे पास सीखने के लिए कुछ भी नहीं है, मेरे नन्हें-मुन्ने?''

''नहीं। वहाँ जानने के लिए कुछ है, लेकिन मैं नहीं जानता कि यह क्या है। यदि मैं हक़दार नहीं हूं तो दस लाख पत्थर भी मुझे पवित्र नहीं कर सकते और मुझे इसकी परवाह नहीं है कि अन्य समुद्री पक्षी मेरे बारे में क्या सोचते हैं।''

''और नन्हें-मुन्ने, तुम्हारा जवाब क्या है?'' इस विरोधी बयान से थोड़े से विचलित होकर उसने पूछा।

''आप जीवन का चमत्कार किसे कहते हैं? महान-गल-जॉनाथन-पवित्र-हो-उसका-नाम ने कहा था कि उड़ान...''

''जीवन एक चमत्कार नहीं है, अधिकारी, यह एक बोरियत है। आपका महान गल जॉनाथन बहुत समय पहले किसी के द्वारा बनाया गया एक मिथक है। एक परी कथा है यह। इसे कमजोर मानते हैं, क्योंकि जैसी यह दुनिया है वे उसका सामना करने के लिए खड़े नहीं हो सकते।

कल्पना करो कि कोई सीगल कैसे उड़ सकता है, प्रति घंटे दो सौ मील की रफ़्तार से! मैंने इसकी कोशिश की और सबसे तेज़ी से पचास मील प्रति घंटा तक पहुँच पाया। ग़ोता लगाने पर तब मैं अक्सर नियंत्रण से बाहर हो जाता हूँ। उड़ान के नियम तोड़े नहीं जाने चाहिए। यदि आपको ऐसा नहीं लगता है तो, आप वहाँ से बाहर जाएँ और यह कोशिश करें! क्या आप ईमानदारी से भरोसा करते हैं – सही मायने में कि अपने महान जॉनाथन सीगल ने *प्रति घंटे दो सौ मील की रफ़्तार से उड़ान भरी थी?*''

''और तेज़ी से,'' अधिकारी ने पूरी तरह अंध श्रद्धा जताते हुए कहा। और ऐसा करने के लिए दूसरों को सिखाया भी।''

''तो आप अपनी परी कथा अपने पास रखें। लेकिन आप मुझे जब दिखा देंगे कि आप उतनी तेज़ी से उड़ सकते हैं, अधिकारी महोदय, तो मैं वह सुनना शुरू कर दूंगा, जो कि आप कहते हैं।''

वहाँ कुंजी थी और ऐंथनी सीगल उसे जानता था। उसने तेज़ी से वह शब्द कहा। उसके पास जवाब नहीं था, लेकिन वह जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा है। यदि किसी भी पक्षी ने वह कर दिखाया तो कृतज्ञता पूर्वक, ख़ुशी से उसके पीछे चलते हुए अपने प्राण दे देगा। उसे बस जीवन संबंधी कुछ ऐसे जवाब मिल जाएँ जो काम कर सकते हों, जिनसे हर दिन की ज़िंदगी में श्रेष्ठता और ख़ुशी मिले। जब तक उसे वह पक्षी नहीं मिल जाता तब तक उसकी ज़िंदगी उदासीन और मनहूसियत भरी, अतार्किक, मकसद से रहित रहेगी। हर सीगल गुमनामी का प्रतीक बनकर खून और पंखों का एक ढेर रह जायेगा।

ऐंथनी सीगल ने अपनी राह ख़ुद चुन ली। वैसा ही अन्य युवा पंछियों ने भी किया। जॉनाथन सीगल के नाम पर हो रहे अनुष्ठान और समारोह ख़ारिज कर दिये गये। वे जीवन की व्यर्थता पर दुखी थे पर कम से कम ख़ुद के प्रति ईमानदार तो थे। वे इस तथ्य का सामना बहादुरी से कर रहे थे कि सब कुछ व्यर्थ है।

फिर एक दोपहर ऐंथनी समुद्र के ऊपर मंडरा रहा था। वह उदास होकर सोच रहा था कि यह जीवन निरर्थक है और चूंकि निरर्थक है इसलिए इसका मतलब मकसद रहित है। ऐसे में यही उचित होगा कि समुद्र में गहरा ग़ोता लगाकर डूब जाये। एक समुद्री शैवाल की तरह मकसद या ख़ुशी के बिना ज़िंदा रहने से अच्छा होगा कि ज़िंदा ही नहीं रहा जाये।

इस सबका कुछ मतलब था। यह शुद्ध तर्क था। ऐंथनी सीगल ने अपने पूरे जीवन में ईमानदारी और तर्क का पालन करने की कोशिश की थी। उसे अभी या बाद में वैसे भी किसी तरह तो मरना ही था। वह लंबी और दर्दनाक बोरियत भरी ज़िंदगी जीने का कोई कारण नहीं देखता था।

इसलिए उसने दो हज़ार फ़ीट से सीधे पानी की ओर ग़ोता लगाने के लिए झटका दिया। वह लगभग पचास मील प्रति घंटे की रफ़्तार से नीचे आने लगा। यह अंततः कुछ अजीब-सा किंतु शानदार निर्णय था। उसे एक जवाब मिल ही गया था, जिसका कोई मतलब निकलता था।

मौत का ग़ोता लगाने के बाद उसके नीचे उफनता समुद्र था। यह और विकराल होता जा रहा था। उसके दाहिने पंख के ठीक पास से सीटी जैसी आवाज़ आ रही थी। एक समुद्री पंछी उसके समीप से उड़ता हुआ गुजरा... ऐसे गुजरा जैसे वह समुद्र तट पर खड़ा हो। दूसरा पक्षी एक सफ़ेद रेखा की तरह दमकता हुआ नीचे की ओर आया, जैसे कोई धुंधली उल्का अंतरिक्ष से गिर रही हो। आश्चर्य में डूबे ऐंथनी ने ग़ोता लगाते समय अपने पंखों से ब्रेक लगाया और घटनाक्रम असहाय होकर देखने लगा।

काला धब्बा धीरे-धीरे समुद्र की ओर धुंधला होते हुए लहरों के ऊपर चमका। फिर कठिनाई के साथ अपनी चोंच सीधे आकाश की ओर करके उठा और लुढ़कने लगा। उसने दूर तक धीमी गति से सीधा लुढ़कना शुरू किया फिर हवा में असंभव-सा लगने वाला एक गोल घेरा बनाया।

ऐंथनी रुककर यह देखने लगा और भूल गया कि वह कहां था। वह फिर थम गया। ''मैं कसम खाता हूँ,'' उसने ज़ोर से कहा, ''मैं कसम लेकर कहता हूँ कि वह एक *सीगल* था!'' वह दूसरे पक्षी की ओर एक बार मुड़ा, जिसने शायद उसे नहीं देखा था। ''अरे!'' वह जितनी ज़ोर से कह सकता था, उतनी ज़ोर से कहा, ''अरे! वहीं रुको!''

समुद्री पंछी ने तुरंत एक पंख खड़ा किया, बहुत तेज़ गति से उसकी ओर लपट की तरह बढ़ा। ऐंथनी ने सीधी उड़ान में ख़ुद को किनारे की ओर खींच लिया, और अचानक हवा में रुक गया। फिर एक रेसिंग-खिलाड़ी की तरह ढलान वाली दौड़ के ख़त्म होने पर रुक गया।

''अरे!'' ऐंथनी बड़ी मुश्किल से साँस ले पा रहा था। ''क्या... *तुम क्या कर रहे हो?''* यह एक मूर्खतापूर्ण सवाल था, लेकिन वह नहीं जानता था और क्या कहा जाए।

''यदि मैंने तुम्हें चौंका दिया हो, तो मैं माफी चाहता हूँ,'' अजनबी ने जिस सुर में कहा वह हवा की तरह साफ़ और मित्रतापूर्ण था। ''मैं तुम्हें पूरे समय देख रहा था। मैं थोड़ा खेल रहा था... मैं तुमसे टकराता नहीं।''

''नहीं! नहीं, ऐसा नहीं है।'' ऐंथनी, अपने जीवन में पहली बार उठा और जीवंत हुआ, प्रेरित हुआ था। ''वह क्या था?''

''ओह, वह कुछ मजे के लिए उड़ान थी, शायद। एक ग़ोता और शीर्ष के समीप घूमते हुए घेरे के साथ धीमी गति से लुढ़ककर ऊपर की ओर उठना। बस, आसपास कुछ खेल। यदि तुम वास्तव में यह अच्छी तरह से करना चाहते हो तो इसके लिए कुछ अभ्यास करना होगा। लेकिन यह एक अच्छी चीज़ है, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?''

“यह, यह... सुंदर है, लेकिन यह है क्या! और आप कभी झुण्ड के आसपास नहीं दिखे। वैसे, आप हैं कौन?”

“तुम मुझे जॉन कह सकते हो।”

अंतिम अध्याय हालांकि एक अद्‌भुत कहानी की तरह लगता है, लेकिन है नहीं।

कैसे किसी के मन में अचानक रोमांच जाग जाता है? अपने काम से प्यार करने वाले लेखकों का कहना है कि रहस्य का एक हिस्सा है जादू। और कोई स्पष्टीकरण नहीं है।

कल्पना एक बूढ़ी आत्मा है। कोई धीरे-धीरे फुसफुसाता है, एक उज्ज्वल दुनिया के बारे में बताता है और वहां के जीव सुख और दुख तथा हार और जीत के साथ दिखते हैं। कहानी सुदंर होती है, लेकिन उसमें शब्द नहीं होते। लेखक अपने द्वारा देखे गए दृश्यों के लिए छवियाँ गढ़ते हैं, शुरू से लेकर आख़िर तक संवाद याद करते हैं। वे अक्षर पिरोते हैं, विराम चिन्ह लगाते हैं और पुस्तक विक्रेताओं तक जाने के लिए तैयार हो जाती है।

कहानियाँ, समितियों और व्याकरण के साथ नहीं गढ़ी जाती हैं, वे एक रहस्य से उछलती हैं, जो हमारी अपनी ख़ामोश कल्पना को छू लेती हैं। प्रश्न कई सालों के लिए हमारे सामने पहेली बन जाते हैं, फिर जवाबों का तूफ़ान ऐसे अनजान तीर-कमानों से आता है, जिन्हें कि हमने कभी नहीं देखा।

ऐसा ही मेरे साथ हुआ। जब मैंने चौथा भाग लिखना बंद कर दिया था तब जॉनाथन सीगल की कहानी पूरी हो चुकी थी।

मैंने बार-बार चौथे भाग को पढ़ा। यह कभी सच नहीं हो सकता! क्या जॉनाथन के पीछे चलने वाले समुद्री पंछियों ने उड़ान की भावना को रीति-रिवाजों से मार दिया? यह अध्याय कहता है, हाँ, ऐसा हो सकता है। मैं इसमें यक़ीन नहीं करता। तीन भागों में इसके बारे में बताया जा चुका है। मेरा मानना है कि चौथे की ज़रूरत नहीं थी : एक सूना

आकाश, धूल जैसे शब्द जो ख़ुशी को ढँक लें। इसे छापने की ज़रूरत नहीं है।

तो, मैंने इसे जलाया क्यों नहीं?

पता नहीं। मैंने इसे दूर रखा। इस पुस्तक का अंतिम भाग ख़ुद में यक़ीन करता है, जबकि मैं नहीं। यह जानता है कि मैंने क्या मना कर दिया था : शासकों की शक्तियाँ और अनुष्ठान धीरे-धीरे हमारी जीने की स्वतंत्रता को ख़त्म कर देंगे।

करीब आधी सदी का समय निकल गया, जिसे भुला दिया गया।

सबरीना को यह कहानी अभी कुछ समय पहले ही मिली थी, अधूरी सी और बेजान सी। बेकार के बिजनेस संबंधी कागजात के नीचे दबी हुई।

"क्या आपको ये याद है?"

"क्या याद है?" मैंने कहा। "नहीं।"

मैंने कुछ पैराग्राफ पढ़े। "ओह। मुझे थोड़ी-बहुत याद है। यह तो..."

"इसे पढ़िये।" वह ख़ुद को मिली उस पुरानी पांडुलिपि के लिए मुस्कराई, जिसने कि उसे छुआ था।

टाइपराइटर के अक्षर धुंधले हो गये थे। भाषा मेरी प्रतिध्वनि थी। यह मेरा लेखन नहीं था; यह उसका लेखन था, जो उस समय बच्चा था।

पांडुलिपि समाप्त हो गई, और मुझे उसकी चेतावनी तथा उसकी उम्मीद के साथ भर दिया।

"मैं जानता हू कि मैं क्या कर रहा था!" उसने कहा। आपकी इक्कीसवीं सदी में अधिकारियों और क्रिया-कलापों का महिमामंडन। अब यह स्वतंत्रता गला घोंटने पर उतारू हो गई है। क्या आप नहीं देखते? यह आपकी दुनिया को सुरक्षित बनाने की योजना है, मुक्त बनाने की नहीं।" उसने अंतिम बार अपनी कहानी कही। "मेरा समय चला गया है। तुम्हारा नहीं।"

मैंने फिर से उसकी आवाज़, यानी अंतिम अध्याय के बारे में सोचा। क्या हम सीगल्स अपनी दुनिया में स्वतंत्रता का अंत देख रहे हैं?

भाग चार कहता है शायद नहीं। जब यह लिखा गया था तब किसी को भी भविष्य का पता नहीं था। अब हमें पता है।

– रिचर्ड बाख़

2013

यह एक कालजयी क्लासिक कृति का नवीन व संपूर्ण संस्करण है जिसमें हाल ही में भाग चार और रिचर्ड बाख़ द्वारा लिखे गए *'अंतिम शब्द'* को जोड़ा गया है।

यह पुस्तक उन आत्माओं के लिए एक गीत है जो लंबे समय से अपने आप में ख़ामोश रही हैं। *जॉनाथन लिविंगस्टन सीगल* की कहानी ऐसे लोगों के लिए है जो जानते हैं कि दूसरों के दिखाए मार्ग पर मजबूरी में चलने की बजाय बेहतर ढंग से जीवन जीने का रास्ता भी है।

यह कहानी उन लोगों के लिए भी है जो उड़ने की चाह रखते हैं। यह छोटी-सी कहानी हमें उस रास्ते पर चलने की याद दिलाती है जो हमारे भीतर ही है। अन्य लोग चाहे हमें देखें, चाहे हमारे रास्ते को सराहें या इसकी निंदा करें, लेकिन हमारे पास प्रेम करने और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का तरीक़ा चुनने की स्वतंत्रता है।
JonathanLivingstonSeagull.com

रिचर्ड बाख़ *इल्यूज़ंस, वन* और *द ब्रिज अक्रॉस फ़ॉरएवर* समेत बीस अन्य पुस्तकों के लेखक हैं। यह उनकी चौथी पुस्तक है जो कई वर्षों तक *न्यू यॉर्क टाइम्स* की बेस्ट सेलर सूची में शामिल रही और दशकों से लाखों लोगों को प्रेरित करती रही है। अमेरिकी वायु सेना में लड़ाकू पायलट रह चुके बाख़, विभिन्न प्रस्तुतियों के लिए देशाटन करने वाले व्यक्ति और विमान मेकैनिक हैं। वे उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में समुद्री विमान उड़ाते हैं। उनकी वेबसाइट है : RichardBach.com

फ़ोटोग्राफ़र के विषय में :
रसल मन्सन ने डेनवर (कोलोराडो) में बचपन से ही विमानों के चित्र लेना शुरु कर दिया था। तब से फ़ोटोग्राफ़ी और उड़ान भरना उनका जुनून बन गया। वे *स्कायवर्ड : वाय फ़्लायर्स फ़्लाय* के लेखक और फ़ोटोग्राफ़र हैं। उन्होंने *फ़्लाइंग रूट 66* नाम की डी.वी.डी. भी बनाई है। मन्सन के आसमान से लिये गए कलात्मक छायाचित्र RussellMunson.com पर देखे जा सकते हैं। वे अपने एवियैट हस्की विमान से चित्र खींचते हैं।